समस्त परिवारी-जनों (स्त्री, पुरुष, बालक और वृद्ध) के समस्त विकारों की चिकित्सा की सरल विधियाँ और वह भी विभिन्न चिकित्सा-पद्धतियों (होम्योपैथिक, बायोकैमिक, आयुर्वेदिक, यूनानी, एलोपैथिक तथा प्राकृतिक) में !

प्रत्येक घर में रहने योग्य अत्यन्त उपयोगी और अनुपम ग्रन्थ !!

सरल परिवार चिकित्सा

सरल परिवार चिकित्सा

- होम्योपैथिक
- बायोकेमिक
- आयुर्वेदिक
- एलोपैथिक
- यूनानी
- प्राकृतिक

समस्त परिवारी-जनों (स्त्री, पुरुष, बालक और वृद्ध) के समस्त विकारों की चिकित्सा की सरल विधियाँ और वह भी विभिन्न चिकित्सा-पद्धतियों (होम्योपैथिक, बायोकैमिक, आयुर्वेदिक, यूनानी, एलोपैथिक तथा प्राकृतिक) में !

प्रत्येक घर में रहने योग्य अत्यन्त उपयोगी और अनुपम ग्रन्थ !!

सरल परिवार चिकित्सा

- होम्योपैथिक
- बायोकेमिक
- आयुर्वेदिक
- एलोपैथिक
- यूनानी
- प्राकृतिक

[केवल पंजीयत-चिकित्सकों के उपयोगार्थ]

सरल परिवार चिकित्सा

(विभिन्न चिकित्सा-पद्धतियों में)

★

लेखक :

डॉ० हरिश्चन्द्र अग्रवाल

M. Sc. M.D. (Homoeo)

एवं

डॉ० राजेश दीक्षित

(गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड्स रिकार्ड में नामांकित)

भाषा भवन, मथुरा

प्रकाशक :

भाषा भवन
हालन गंज, मथुरा

*

लेखक :

डॉ० हरिश्चन्द्र अग्रवाल
एवं
डॉ० राजेश दीक्षित

*

नवीन संस्करण

2000

*

*

मूल्य : रु. ~~24/-~~ 25/-

मुद्रक :
भाषा भवन प्रेस, मथुरा

विषय सूची

विषय	पृष्ठ

विभिन्न रोगों की सरल - चिकित्सा

रोग और उपचार

भारत जितनी विपुल जनसंख्या वाला देश है, उतना ही दरिद्र तथा रोगाक्रान्त भी है । यहाँ के अधिकाँश निवासी रोगी हो जाने पर धनाभाव एवं समुचित तथा सामयिक चिकित्सा के अभाव में अकाल में ही काल-कलवित हो जाते हैं । सरकार के पास इतने साधन नहीं हैं कि वह सभी देशवासियों की स्वास्थ्य-रक्षा एवं चिकित्सा का समुचित प्रबन्ध कर सके तथा सुयोग्य-चिकित्सकों में सेवा-भावना के स्थान पर धनोपार्जन की प्रवृत्ति इतनी अधिक बलवती हो गई है कि वे दरिद्रनारायणों के बीच पहुँचकर उन्हें व्याधि-मुक्त नहीं कर पाते । ऐसी स्थिति में केवल यही साधन शेष रह जाता है कि यहाँ के सभी निवासी विभिन्न रोगों के चिकित्सा-विषयक सामान्यज्ञान को स्वयं अर्जित करें और उससे अपना तथा अपने सम्पर्क के अन्य लोगों का भी कल्याण करें । प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन का भी यही मुख्य उद्देश्य है । इसमें विभिन्न रोगों की चिकित्सा विषयक स्वल्प मूल्य में तैयार हो जाने वाले सरल तथा उपयोगी आयुर्वेदिक, यूनानी, होम्योपैथिक एवं एलोपैथिक औषध-योगों को सङ्कलित किया गया है । चिकित्सा के अभाव में इन योगों के प्रयोग द्वारा रोगी की प्राण-रक्षा में बहुत कुछ सहायक बनाया जा सकता है । इस दृष्टि से इस पुस्तक का पठन-पाठन प्रत्येक स्त्री-पुरुष के लिए उपयोगी एवं आवश्यक है ।

इस पुस्तक में प्रत्येक रोग के संक्षिप्त लक्षणों के साथ ही उसके लिए उपयोगी आयुर्वेदिक, यूनानी, होम्योपैथिक एवं एलोपैथिक औषधियों के योगों को क्रमशः वर्णन किया गया है । जो महानुभाव जिस चिकित्सा-पद्धति में आस्था रखते हों, वे उसी के योगों द्वारा लाभ उठा सकते हैं तथा वैद्य, हकीम एवं डाक्टरों के चक्कर से बचकर अपनी आर्थिक-हानि को भी रोक सकते हैं । जिन स्थानों पर वैद्य, हकीम अथवा डाक्टरों का अभाव हो, वहाँ के निवासियों के लिए तो यह पुस्तक और भी अधिक उपयोगी सिद्ध होगी । चिकित्सक के आने तक प्राथमिक उपचार के रूप में भी इसका लाभ उठाया जा सकता है।

इस पुस्तक के आयुर्वेदिक तथा यूनानी योगों में वर्णित अधिकांश वस्तुएं घर में ही मौजूद रहती हैं, शेष जड़ी-बूटी आदि को खेतों तथा जङ्गलों से एवं अन्य वस्तुओं को पंसारियों तथा अत्तारों की दुकानों से सरलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है । होम्योपैथिक तथा एलोपैथिक औषधियाँ बड़े नगरों में होम्योपैथिक-स्टोर एवं अंग्रेजी दवा बेचने वालों की दुकान से खरीदी जा सकती हैं ।

सावधानी

किसी भी रोग की चिकित्सा आरम्भ करने से पूर्व विश्वासपूर्वक किसी एक पद्धति की औषध का ही सेवन करना चाहिए । जब अधिक समय तक उससे कोई लाभ दिखाई न दे, तभी अन्य चिकित्सा-प्रणाली के योगों को अपनाना चाहिए । विभिन्न चिकित्सा-पद्धतियों के योगों का एक साथ प्रयोग हानिकारक सिद्ध होगा, अतः इस सम्बन्ध में सतर्क रहने की आवश्यकता है ।

यह भी ध्यान रखना चाहिए कि इस पुस्तक में जिन रोगों के योगों का वर्णन किया गया है, वे सभी सामान्य-चिकित्सा से सम्बन्धित हैं । यदि रोगी की स्थिति गम्भीर हो तो किसी अनुभवी-चिकित्सक की सहायता ही लेनी चाहिए। इस सम्बन्ध में प्रमाद करना घातक सिद्ध हो सकता है । यों पुस्तक में सङ्कलित प्रत्येक योग लाभकारी हैं, परन्तु निदान की गलती एवं रोग की संक्रामकता के विषय में सजग रहना आवश्यक है । जब भली-भाँति यह निश्चय हो जाय कि अमुक व्यक्ति को अमुक रोग ही है, तब सम्बन्धित औषधीय-योगों का नियमपूर्वक प्रयोग किया जा सकता है ।

पथ्यापथ्य

चिकित्सा के साथ ही रोगी के पथ्यापथ्य के सम्बन्ध में भी पूरा-पूरा ध्यान देना चाहिए । इससे रोग के शीघ्र-शमन में सहायता मिलेगी । अपथ्य होने पर अच्छी से अच्छी औषध भी प्रभावहीन हो जाती है- यह सामान्य औषध-सेवन-काल में रोगी को दूध, बार्ली, साबूदाना, मूँग की दाल, अनार, बीदाना, मौसमी आदि सुपाच्य-पदार्थों का ही सेवन करना चाहिए । हींग, मिर्च, प्याज, लहसुन आदि तेज मसाले, खटाई, गुड़, तेल, शराब, भाँग, गाँजा, तम्बाकू आदि भारी, देर से पचने वाली तथा हानिकारक वस्तुओं का सेवन सर्वथा त्याग देना चाहिए । रोगी को लाभ होने पर उसे हल्की रोगी मूँग की दाल, लौकी का साग, भात आदि शीघ्र पच जाने वाली वस्तुएँ खाने के लिए देनी चाहिए। पीने के लिए पानी कुछ गुनगुना हो तो अधिक अच्छा रहता है । वमन (उल्टी)

होने की स्थिति में ठण्डा पानी पीना अथवा बर्फ के टुकड़ों को चूसना उपयोगी है ।

होम्योपैथिक औषधियाँ

औषध की मात्रा तथा उनके सेवन-काल का उल्लेख प्रायः प्रत्येक योग के साथ किया गया है । होम्योपैथिक-औषधियों की पोटेन्सी (शक्ति) के विषय में लिखा गया है । जहाँ किसी होम्योपैथिक-औषध के क्रम (पोटेन्सी) का उल्लेख न हो, वहाँ वयस्क व्यक्ति को सामान्यतः 30 शक्ति की औषध देना उचित रहता है । रोग की न्यूनाधिकता एवं नवीनता-जीर्णता के आधार पर होम्योपैथिक औषध की पोटेन्सी का अलग से निर्णय भी किया जा सकता है। होम्योपैथिक औषधियाँ अलग-अलग क्रमों में तैयार की हुई औषध विक्रेताओं की दुकान पर मिल जाती हैं, अतः जिस क्रम (पोटेन्सी) वाली औषध की आवश्यकता हो, उसी क्रम की औषध को खरीद लेना ही अधिक अच्छा रहता है । यों, होम्योपैथिक औषधियों के विभिन्न क्रम स्वयं भी तैयार किये जा सकते हैं, परन्तु उसके लिए अधिक अनुभवी होना आवश्यक है । जो लोग होम्योपैथिक औषधियों के क्रम स्वयं ही तैयार करना चाहें अथवा इस पद्धति के विषय में अधिक जानने के इच्छुक हों, उन्हें भाषा भवन, मथुरा द्वारा प्रकाशित होम्योपैथिक-चिकित्सा विषयक पुस्तकों का अलग से अध्ययन करना चाहिए ।

औषध का चुनाव

इस पुस्तक में प्रत्येक रोग के लिए उपयोगी विभिन्न-चिकित्सा - पद्धतियों के एक से अधिक योगों का वर्णन किया गया है । उनमें से जो रोग की स्थिति के अनुकूल अधिक उपयोगी प्रतीत हों, उसी का चुनाव करना चाहिए । यदि एक योग अनुकूल न पड़े तो उसके स्थान पर दूसरे योग का चुनाव किया जा सकता है, परन्तु यदि प्रतिकूलता दिखाई न दे तो किसी भी योग का प्रयोग आरम्भ करने के बाद कुछ समय तक उसी का सेवन करते रहना चाहिए तथा लाभ दिखाई देने पर केवल उसी को उपयोग में लाना चाहिए ।

स्वच्छता

रोगी जिस जगह रहता है, उस स्थान का स्वच्छ, हवादार तथा खुला होना आवश्यक है । गन्दे, सीलन अथवा दुर्गन्धयुक्त, जिसमें हवा और धूप का समुचित प्रवेश न हो तथा धूलि अथवा धुएँ वाली जगह में रोगी को नहीं रखना चाहिए । रोगी की आवश्यकता के अनुकूल सर्दी-गर्मी का बचाव रखना भी

आवश्यक है । रोगी के बिस्तर तथा पहनने के वस्त्र एवं उपयोग में आने वाले बर्तन- इन सभी की स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है । गन्दगी रोग को घटाने की बजाय बढ़ाती है तथा वह रोग के कीटाणुओं को शरण भी देती है ।

संक्रामक तथा क्लिष्ट रोग

इस पुस्तक में सामान्य-रोगों के सरल चिकित्सा-योगों का वर्णन किया गया है, परन्तु हैजा, निमोनिया, टाइफायड, चेचक आदि व्याधियाँ प्राणघातक तथा संक्रामक भी होती हैं । अतः ऐसा कोई कठिन रोग हो जाने पर किसी अनुभवी चिकित्सक की सहायता प्राप्त करना आवश्यक है । जब कोई चिकित्सक उपलब्ध ही न हो, तब इस पुस्तक में वर्णित योग भी प्रभावकारी सिद्ध होंगे । इसी दृष्टि से कुछ संक्रामक तथा क्लिष्ट रोगों की चिकित्सा भी इसमें सङ्कलित की गई है । सर्पदंश, विष-प्रयोग तथा आकस्मिक व्याधियों के उपचार की चिकित्सा का वर्णन भी इसी उद्देश्य को सामने रखकर किया गया है ।

सामान्य-ज्वर (General Fever)

सर्दी, तेज धूप, वर्षा में भीगना, अधिक परिश्रम, चोट, रात्रि-जागरण, जलवायु के परिवर्तन, अनियमित भोजन, उपवास, मादक वस्तुओं का सेवन आदि कारणों से शरीर में उष्णता की मात्रा बढ़ जाती है, जिसे 'सामान्य-ज्वर' कहते हैं । सामान्य-ज्वर में सिर-दर्द, सम्पूर्ण शरीर में दर्द, बेचैनी, प्यास पेशाब के रङ्ग में परिवर्तन आदि लक्षण प्रकट होते हैं । सामान्य-ज्वर प्रायः 3 दिन में स्वयं ही ठीक हो जाता है । इसमें शरीर का तापमान 102 डिग्री के लगभग हो जाता है । सामान्य-ज्वर की चिकित्सा के लिए निम्नलिखित औषधियाँ हितकर हैं ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) पान का रस, अदरक का रस तथा शहद— इन तीनों को 5-6 माशे की मात्रा में मिलाकर प्रातः-सायं पियें । इससे सामान्य-ज्वर शीघ्र दूर हो जायेगा।

(2) तुलसी के पत्ता 20 नग, कालीमिर्च 20 नग, अदरक 6 माशा, दालचीनी 2 माशा— इन सब वस्तुओं को 1 पाव पानी में डालकर औटायें। फिर आग से नीचे उतार कर छान लें । उसमें $2\frac{1}{2}$ तोला मिश्री मिलाकर पीने से सामान्य-ज्वर ठीक हो जायेगा ।

(1) नीम की छाल 2 छटाँक को कूटकर किसी मिट्टी के बर्तन में डालें, फिर उसमें 8 छटाँक पानी डालकर आग पर चढ़ा दें और खूब उबालें जब पानी दो छटाँक रह जाय, तब उसे उतार कर छान लें तथा उसमें शहद अथवा मिश्री डालकर गुनगुना ही पी जायें ।

काढ़े को पीने के बाद सम्पूर्ण शरीर को कपड़े से ढाँपकर लेट जायें । थोड़ी ही देर में पसीना आकर ज्वर उतर जायगा । यदि आवश्यकता हो तो दूसरे दिन भी यही प्रयोग करें । यह उपाय कुनैन से भी अधिक लाभ करता है तथा हर प्रकार के ज्वर में उपयोगी है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) हरी गिलोय 1 तोला वजनी टुकड़े को रात के समय पानी में भिगोकर रख दें । सुबह उसे मलकर तथा छानकर पी लें । इससे नया तथा पुराना दोनों तरह के बुखार दूर हो जाते हैं ।

(2) देशी अजवायन 1 तोला को सुबह मिट्टी के एक कोरे बर्तन में डेढ़पाव पानी भरकर भिगो दें । दूसरे दिन सुबह उस पानी को छानकर पी लें लगातार 7-8 दिन इसी प्रकार पीते रहने से नया तथा पुराना दोनों तरह के बुखार दूर हो जाते हैं ।

(3) फिटकरी के फूले का सफूफ बनाकर, 1 से 3 माशे तक की मात्रा में दिन में 2 या 3 बार शहद मिलाकर चाटने से मामूली बुखार ठीक हो जाता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

एकोनाइट 3x, 30— ठण्ड या सूखी हवा लगने, धूप लगने, ओस में सोने आदि के कारणों से उत्पन्न ज्वर— जिसमें प्यास बेचैनी, सिर-दर्द, अधिक हो, में इसे 2-2 घण्टे बाद दें । पसीना आ जाने पर औषध देना बन्द कर दें।

रसटाक्स 6— बरसात की ठण्डी हवा लग जाने के कारण उत्पन्न ज्वर में विशेष हितकर है ।

इपिकाक 6— तीव्र ज्वर के साथ जी मचलाना अथवा वमन होना आदि लक्षण हों और साथ खाँसी भी हो तो इसे दें ।

पल्सटिला 6— अधिक खाने-पीने या स्नान के बाद आने वाला ज्वर, जिसमें प्यास बिलकुल न हो— उसमें यह औषध लाभ करती है ।

बेलाडोना 6— ठण्ड लग जाने के कारण आने वाला ज्वर, जिसमें रोगी का

मुँह तथा होंठ सूख गये हों, सिर में दर्द, प्यास आँखों में लाली तथा नसों का फड़फड़ाना आदि लक्षण अधिक हों । मोटे शरीर वालों के लिए यह विशेष हितकर है।

ब्रायोनिया 6— सूखी खाँसी, श्वास लेने में कष्ट, सिर, गर्दन, हाथ, पाँव तथा पीठ में दर्द, अधिक प्यास, हिलने डुलने से दर्द का बढ़ना, जीभ का मैली अथवा पीली हो जाना ; मुँह का स्वाद बिगड़ जाना आदि लक्षणों में ।

नक्सवोमिका 6, 30— सर्दी के कारण होने वाला ज्वर, जिसमें नाक बन्द हो तथा कब्ज की शिकायत हो ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) वायनम एण्टीमनी 10 बूँद, लाइकर, अमोनिया, एसीटेटिस $1\frac{1}{2}$ ड्राम, लाइकर मौरफाइनी हाइड्रोक्लोर 5 बूँद तथा एकुआ (पानी) 4 ड्राम यह सब मिलाकर 1 खुराक है । हर 3-3 घण्टे बाद ऐसी 1-1 खुराक देने से सामान्य-ज्वर में लाभ होता है ।

(2) टिंक्चर एकोनाइट, 30 बूँद, एण्डीफेब्रिक 1 ड्राम, रेक्टीफाइट स्पिरिट 1 ड्राम तथा डिस्टिल-वाटर 6 ड्राम ।

पहले एण्टीफेथिन तथा स्पिरिट को मिला लें, बाद में अन्य सब औषधियाँ मिला दें ।

मात्रा $\frac{1}{2}$ से 1 ड्राम तक, हर तीन घण्टे बाद इस औषध-सेवन से एक घण्टे बाद दूध अवश्य पिलाना चाहिए ।

(3) लाइकर अमोनिया एलीटेटिस 2 ड्राम, पुटास साइटस 5 ग्रेन स्पिरिट ईथर नाइट्रोसी 20 बूँद तक एकुआ कैम्फर 1 औंस— यह एक खुराक है । हर 3-3 घण्टे बाद 1-1 खुराक औषध ज्वर की तेजी में दें, यदि कब्ज भी हो तो प्रत्येक मात्रा में 1 ड्राम मैगसल्फ भी मिला दें ।

(4) सोल्यूशन ऑफ एसीटेट 3 ड्राम, स्पिरिट ऑफ नाइट्रास ईथर्स 3 बूँद, पोटाशियम नाइट्रास 10 ग्रेन तथा पानी, कुल मिलाकर 1 औंस । यह भी ज्वर में उपयोगी है ।

(5) मैग सल्फ 1 औंस, लाइकर अमोनिया एसीटाट 1 औंस, पोटास साइट्रास 20 ग्रेन, स्पिरिट ईथर नाइट्रोसी 2 ग्राम, टिंक्चर क्लोरोफार्म, कम्पा, 40 बूँद, टिंक्चर वाटर 8 औंस— इन सबको मिलाकर रखलें । मात्रा 1 औंस, दिन में दो बार दें ।

(6) पेटेण्ट औषधियों में एनासिन, एस्प्रो आदि भी सामान्य-ज्वर को दूर

कर देती है ।

सर्दी का ज्वर या जुकाम (Fathrral Fever)

ठण्डी हवा लगने, पानी में भीगने, ओस में सोने आदि कारणों में विशेषतः गर्मी-सर्दी के असन्तुलन से यह रोग होता है । इसमें शरीर में हल्का बुखार रहता तथा नाक में पानी बहने लगता है । तीन दिन बाद यह रोग अपने आप ठीक हो जाता है । रोग की अवधि में केवल गुनगुने पानी का सेवन करना शीघ्र लाभ पहुँचाता है । अन्य औषधीय योग इस प्रकार हैं—

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) नीम गिलोय, लाल चन्दन, खसखस, बड़ी हरड़ तथा नागरमोथा-इन सबको ढाई-ढाई तोला लेकर कूट-पीस लें और सबकी तीन पुड़िया बनाकर रख लें । एक पुड़िया को आधा किलो पानी में उबालें, जब 250 ग्राम पानी शेष रह जाय, तब उतार कर छान लें । इस औषधीय-क्वाथ को दिन में दो बार प्रयोग में लायें । एक छटाँक काढ़े की मात्रा में आधी छटाँक शहद अथवा मिश्री मिलाकर सेवन करें । इसी प्रकार दो मात्रा दिन में तथा दो मात्रा रात्रि में सेवन करें । अन्य कोई वस्तु न खायें । प्यास लगने पर गुनगुना पानी पियें। इससे दो दिन में ज्वर तथा जुकाम ठीक हो जायगा ।

(2) सोंठ, छोटी पीपल तथा कालीमिर्च को समभाग लेकर पीस लें तथा चौगुना गुड़ मिलाकर बड़ी मटर के बराबर की गोलियाँ बनाकर रख लें । एक-एक गोली दिन में तीन-बार गरम पानी के साथ सेवन करें ।

(3) अदरख का रस तथा शहद 6-6 माशा मिलाकर दिन में 3-4 बार चाटें ।

(4) काले जीरे का चूर्ण सूँघने से जुकाम ठीक हो जाता है ।

(5) कलौंजी को कपड़े में बाँधकर सूँघने से जुकाम ठीक हो जाता है।

(6) गरम दूध में 10-15 कालीमिर्च तथा मिश्री पीसकर मिला दें और पी जायँ । इससे जुकाम अवश्य ठीक हो जाता है ।

(7) अदरक के स्वरस 6 माशे में शहद 6 माशे मिलाकर चाटने से जुकाम ठीक हो जाता है ।

यूनानी चिकित्सा

(1) उन्नाव 7 अदद, लिसौड़ा 7 अदद, बनफशा, गाजवाँ, मुलेठी, खसखस और सौंफ— ये सभी 6-6 माशा और तुरञ्जबीन 1 तोला— इन सबको ढाई तोला मिश्री के साथ क्वाथ बनाकर आधा सुबह और आधा शाम को पी लें । यह जुकाम में तुरन्त फायदा पहुँचाने वाली दवा है ।

(2) खूबकलाँ 2 तोला को आधा सेर पानी में औटायें । जब 2 छटाँक पानी शेष रह जाय, तब उतार कर छान लें तथा मिश्री मिलाकर पियें । इससे जुकाम दूर होगा ।

(3) गेहूँ का चौकर 2 तोला तथा गुनबनफसा 1 तोला— इनका काढ़ा बनाकर पीने से जुकाम ठीक हो जाता है ।

(4) कपूर को एक कपड़े से बाँधकर बार-बार सूँघने से भी जुकाम ठीक हो जाता है ।

(5) लौंग को पीसकर तालु पर लगाने से जुकाम और सर्दी का नजला ठीक हो जाता है ।

(6) कालीमिर्च का चूर्ण, हल्दी का चूर्ण और काले नमक का चूर्ण— इन तीनों का समभाग लेकर पावभर पानी में पकायें, जब आधा पानी रह जाय, तब गरम-गरम पी लें । इससे नया जुकाम, सर्दी और जुकाम के कारण होने वाला सिर-दर्द दूर हो जाता है ।

(7) गुलबनफशा 6 माशा, बतासे 5 माशा, अदरक 4 माशा और कालीमिर्च 4 रत्ती— इन्हें 1 पाव पानी में पकायें । जब आधा पानी रह जाय तब मल-छानकर कुछ ठण्डा (गुनगुना) करके पी लें । जुकाम में बहुत लाभ होता है ।

(8) भुने हुए गरम चनों को सूँघने से जुकाम और सिर-दर्द में आराम होता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

एकोनाइट 3x, 6— ज्वर, नाक से पानी बहना, प्यास, बेचैनी, छींकें आना आदि लक्षणों पर ।

इपिकाक 6, 30— ज्वर, छींकें, वमन, मिचली, श्वास-कष्ट, कफ आदि लक्षणों पर ।

एलियम सिपा 3x, 6— ज्वर, आँख-नाक से पानी गिरना, गले में खराश,

हाथ-पाँव तथा शरीर में भड़कन, बार-बार पेशाब आना, शाम के समय तकलीफ का बढ़ जाना आदि लक्षणों पर ।

नक्सवोमिका 30— ज्वर, कब्ज, नासा-छिद्रों का बन्द हो जाना आदि लक्षणों पर ।

पल्सेटिला 6— सिर का भारीपन, तर-खाँसी, सर्दी के कारण ज्वर, कफ का निकलना, किसी वस्तु का स्वाद एवं गन्ध का मालूम न होना आदि लक्षणों पर ।

विशेष— इस रोग के आरम्भ में केवल 1 बूँद 'अर्क-कपूर' दे देने से ही लाभ हो जाता है । बाद में आवश्यकता पड़ने पर उक्त औषधियों को 24 घण्टे में 3-4 बार से अधिक न दें ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) अमोनिया-कार्ब 5 ग्रेन, टिंक्चर कैम्फर कम्पाउण्ड 20 बूँद, स्पिरिट क्लोरोफार्म 20 बूँद, एकुआ मैथा पिप 1 औंस— इन्हें मिलाकर रख लें तथा दिन में 3 बार पिलायें । यह नजला, जुकाम तथा सर्दी के ज्वर में हितकर है।

(2) टिंक्चर बेलाडोना 10 बूँद, लाइकर माफिया 10 बूँद, लाइकर अमोनिया, एसीटेट 20 बूँद, स्पिरिट क्लोरोफार्म 30 बूँद तथा एकुआ कैम्फर 1 औंस ।

यह 1 मात्रा है । दिन में 3 मात्रायें देने से सर्दी के ज्वर तथा जुकाम में लाभ होता है ।

(3) पेटेण्ट औषधियों में एम्प्रो, ऐनासिन तथा एल्कोसिन आदि भी जुकाम में लाभ करती हैं ।

(4) बैक्सीन कटारेल तथा वैक्सीन कोराइज के टीके इसमें बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं ।

इन्फ्लुऐञ्जा (Influenza)

यह वातावरण के दूषित हो जाने पर फैलने वाला संक्रामक-रोग है । इसमें सर्वप्रथम गले में कुछ सुरसुहाहट-सी अनुभव होती है, स्वर कुछ भारी हो जाता है तथा नाक पर प्रभाव पड़कर जुकाम हो जाता है । तदुपरान्त मलेरिया की तरह जाड़ा लगकर 104 डिग्री तक ज्वर आता है । प्यास, बेचैनी तथा सिर में दर्द, सूखी खाँसी, भूख न लगना आदि लक्षण प्रकट होते हैं । श्वास-नली के अधिक प्रभावित हो जाने पर न्युमोनिया भी हो सकता है । सामान्यतः ज्वर

तीन दिन में दूर हो जाता है, परन्तु शारीरिक कमजोरी कई दिनों तक बनी रहती है । इसके लिए निम्नलिखित उपचार हितकर हैं ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) तुलसी की पत्ती 10-15 कालीमिर्च 5-6 दालचीनी का टुकड़ा थोड़ा-सा तथा कुटा हुआ अदरक थोड़ा-सा इन सबको चाय की भाँति पानी में उबाल कर पीने से इस रोग में लाभ होता है । जब यह बीमारी संक्रामक रूप में फैल रही हो, तब इस चाय को पीते रहने पर रोग के बचाव होता है ।

(2) जुकाम के लिए जिन औषधियों का उल्लेख किया जा चुका है वे सब इन्फ्लुऐञ्जा में भी लाभ करती हैं ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) तुलसी के पत्ते 1 तोला, लौंग 7 नग तथा नमक 3 माशा—इन सबको एक पाव पानी में उबालें । जब आधा पानी रह जाय, तब छानकर पिलायें ।

(2) अजवायन और दालचीनी—दोनों को 2-2 माशा लेकर पानी में उबालें तथा उस पानी को छानकर पिलायें ।

गुलबनफशा 1 तोला तथा कालीमिर्च 7 दाने को पानी में जोश देकर छान लें तथा थोड़ी-सी चीनी मिलाकर गरम-गरम पिलायें ।

इन्फ्लुऐञ्जा-नाशक दवा देने से पहले अगर रोगी को कब्ज हो तो पहले कोई ऐसी हल्की दवा देनी चाहिए, जिससे एक-दो दस्त साफ आ जायँ और कब्ज दूर हो जाय ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

इन्फ्लुऐञ्जिनम 30, 200— यह इस रोग की मुख्य प्रतिषेधक औषध है । रोग के आरम्भ होते समय एक दिन के अन्तर से इसकी 1-1 मात्रा का सेवन करते रहना चाहिए ।

बैप्टीशिया 1x, 3x— इसे इन्फ्लुऐञ्जिनम के अभाव में दिया जा सकता है । अत्यधिक सुस्ती, आलस्य, सिर तथा आँखों में भारीपन, शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो जाने जैसा अनुभव आदि लक्षणों में हितकर है ।

रसटाक्स 6— पानी से भीगने अथवा सर्दी लगने के कारण रोग हुआ हो तो इसे दें । इसमें जीभ का अग्रभाग लाल रहता है ।

जेल्सीमियम 30— चेहरे का तमतमाना, आँखों में पानी भरा रहना, सिर

में भारीपन और दर्द, सम्पूर्ण शरीर में दर्द, सुस्ती, कम्प, ठण्ड लगना, आदि लक्षणों पर ।

आर्सेनिक 3x, 6, 30— अत्यधिक प्यास, भय, बेचैनी, स्वर-भङ्ग थकान, गहरी सुस्ती, कष्टदायक खाँसी, चिकना तथा कड़ा बलगम, छींक तथा अर्द्धरात्रि के बाद रोग के लक्षण बढ़ने पर इसे देना चाहिए ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) लाइकर अमोनिया एसीटेट 3 ड्राम, टिंक्चर एकोनाइट 1 बूँद, स्पिरिट ईथरिस नाइट्रोसि 1 ड्राम, टिंक्चर क्लोरोफार्म 20 बूँद, टिंक्चर नक्स वोमिका 15 बूँद तथा डिस्टिल्ड वाटर 1 औंस— इन सबको मिला दें । इसे 1 औंस की मात्रा में तीन बार दें, यह इन्फ्लुऐञ्जा में हितकर है ।

(2) ऐस्प्रीन 5 ग्रेन तथा डोबर्स पाउडर 5 ग्रेन— दोनों को मिला लें, इस मिश्रण को 6-6 घण्टे के अन्तर से दें । इसे देने के बाद पसीना के लिए निम्नलिखित मिक्श्चर देना चाहिए ।

लाइकर अमोनिया एसीटेट 120 बूँद, पोटाश एसीटास 20 ग्रेन, स्पिरिट ईथर नाइट्रोसाई 15 बूँद, सिरप एरेशिया 30 बूँद, एकुआ क्लोरोफार्म 1 औंस। इसे 4-4 घण्टे के अन्तर से देना चाहिए ।

पित्त-ज्वर (Continued Fever)

यह ज्वर वर्षाऋतु अथवा उसके अन्त में—(भादों से कार्तिक मास के बीच) आता है । जिस वर्ष वर्षा अधिक होती है, तब इसका प्रकोप अधिक रहता है । वर्षाऋतु में पित्त का सञ्चय होता है और वह शरद ऋतु में कुपित होकर अनेक रोग उत्पन्न कर देता है। अतः वर्षा ऋतु के समाप्त होने पर जब धूप पड़ती है, तब पित्त दूषित होकर ज्वर उत्पन्न कर देता है । इस ज्वर में शरीर का तापमान 103 से 106 डिग्री तक हो जाता है । सिर का गरम रहना, पसीना अधिक आना, आँखों में लाली, अनिद्रा, मुँह का स्वाद कड़वा हो जाना, पेशाब के रङ्ग में पीलापन, पतले दस्त, बेचैनी आदि लक्षण प्रकट होते हैं, यह ज्वर 7 से 10 दिन के बीच उतर जाता है । कभी-कभी 21 दिन तक भी रहता है । इसके निम्नलिखित उपचार हैं ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) नागरमोथा, खस, पित्तपापड़ा, लालचन्दन, सुगन्ध-वाला तथा सौंठ— इन छः वस्तुओं को मिलाकर 1 तोला लें तथा 1 सेर पानी में डालकर

औटायें। जब आधा पानी शेष रह जाय तब उतारकर छान लें और उसे किसी मिट्टी के बर्तन में रख दें । रोगी को प्यास लगने पर केवल इसी 'षड़ङ्गजल' का सेवन करायें । शास्त्रों ने कहा है कि इस ज्वर में 7 दिन तक कोई औषध न दी जाय। केवल इसी पानी का सेवन करने से रोगी की बेचैनी, प्यास तथा ज्वर में कमी आ जायेगी । 7 दिन बाद रोगी स्वयं ही घटकर दसवें दिन आरोग्य हो जाता है । यदि इस बीच औषध देना आवश्यक ही जाना पड़े तो केवल अदरक का रस 3 माशा एवं शहद 3 माशा में 1 रत्ती मकरध्वज मिलाकर सेवन कराना चाहिए । मकरध्वज को शहद में मिलाकर, उनमें 1 तोला धनिये का पानी, परवल के पत्तों का रस अथवा अनार का रस मिलाकर देने से भी बहुत लाभ होता है । यदि 7 दिन बीत जाने पर भी ज्वर का वेग कम न हो तो निम्नलिखित काढ़ा देने से तुरन्त लाभ होगा, परन्तु 7 दिन से पहले यह काढ़ा नहीं देना चाहिए।

जवासा, पित्तपापड़ा, चिरायता, कुटकी, अड़ूसे की जड़ और प्रियंगु के फूल— इन 6 औषधियों को बराबर-बराबर कुल 2 तोला लें तथा आधा सेर पानी में डालकर चतुर्थांश जल शेष रहने तक औटायें । बाद में उतारकर छान लें और उनमें 2 तोला मिश्री डालकर पी जायं, इसके सेवन से पित्त-ज्वर, वमन, तृषा, जलन आदि में लाभ होगा ।

(2) केवल पित्तपापड़े का काढ़ा भी पित्त-ज्वर में हितकर है । यदि पित्तपापड़े के साथ लाल चन्दन, खस और सोंठ— इन तीनों को भी समभाग, मिलाकर काढ़ा बनाया जाय उसे मिश्री मिलाकर पीया जाय तो भी बहुत लाभ होगा ।

(3) ज्वर को कम करने के लिए गुलाबजल अथवा ठण्डे पानी में सफेद कपड़ा भिगोकर रोगी के सिर पर पट्टी रखनी चाहिए ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) शाहतरा (पित्तपापड़ा), लालचन्दन, नेत्रबाला और सोंठ- इन सबको 4-4 माशा लेकर, इनका काढ़ा बनाकर 3-4 दिन तक लेने से पित्त ज्वर (सफराबी तपह) दूर हो जाता है ।

(2) शर्बत बजूरी या शर्बतलोफर को पानी में मिलाकर पिलाने से पित्त-ज्वर में लाभ होता है । शर्बत, बजूरी पित्त-ज्वर की गर्मी को शान्त करने में बहुत मुफीद है । यह अत्तारों की दुकान पर मिलता है ।

(3) खमीरी खस के चाटने से पित्त-ज्वर और प्यास में फायदा होता है। यह भी अत्तारों के यहाँ मिलता है ।

(4) शर्बत बनफशा— दाह, ज्वर तथा खाँसी में लाभ करता है । शर्बत आलूबुखारा- कफ को दूर करता है, प्यास और जलन को मिटाता है, तथा पित्त को निम्न-मार्ग से निकाल देता है । ये शर्बत अत्तारों के यहाँ मिलते हैं ।

(5) गिलोय, शाहतरा, धनियाँ, मुलहठी, खस, काकड़ासिङ्गी— ये सब सवा-चार मासे लेकर, आधा सेर पानी में औटायें । आधापाव पानी शेष रहने पर मलकर व छानकर पिलायें । इसी तरह सुबह-शाम पिलाते रहें । इस जुशांदे के सेवन से गरमी अथवा नये पुराने तरह के पित्तज्वर में लाभ होता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

ब्रायोनियाएल्वा 3, 6, 30— हाथ, पाँव, पीठ, सिर, गर्दन, में दर्द, सूखी खाँसी, श्वास लेने में कठिनाई, तीव्र-प्यास, अरुचि, मुँह के स्वाद में तीखापन, चेहरे पर पीलापन एवं किसी वस्तु के खाने पर वमन हो जाना- आदि लक्षणों पर लाभकारी है ।

विरेट्रम-विरिडि 1x— अधिक कम्प, नाड़ी में तीव्रता तथा भारीपन दुर्बलता, जीभ का पीला पड़ जाना, जी मिचलाना आदि लक्षणों पर इसे दें ।

इयुपेटोरियम पर्फ 3— पित्त की वमन, जी मिचलाना, पानी पीने के बाद वमन हो जाना, सिर एवं सम्पूर्ण शरीर में दर्द आदि लक्षणों पर लाभकर है ।

जेल्समियम 1x— प्यास का कम अथवा बिल्कुल न लगना, आँखों से धुन्धला दिखाई पड़ना, नाड़ी की गति धीमी, कमजोरी की अधिकता आदि लक्षणों पर दें ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) सोड़ा बाईकार्ब 10 ग्रेन, पोटाश साइट्रास 10 ग्रेन, पोटाश एसिटास 10 ग्रेन, सोडा सेलिसिलास 10 ग्रेन, सिरप सिम्पलैक्स 1 ड्राम, टिंक्चर कार्ड को 10 बूँद (सब मिलाकर) 1 औंस ।

यह एक मात्रा है । दिन में 3-4 बार देने से ज्वर धीरे-धीरे कम हो जाता है तथा मस्तक एवं शरीर की पीड़ा भी शान्त हो जाती है ।

(2) विटा साइट्रान 1 ड्राम, सिरप सिम्पलैक्स 1 ड्राम, टिंक्चर कार्ड कं० मिलि. एकुआ (सब मिलाकर) 1 औंस ।

यह एक मात्रा है । दिन में 3-4 बार देने से ज्वर दूर हो जाता है ।

(3) एलिक्सर को, कम्पलैक्स 1 ड्राम, विटामिन सी, 1M मि. ग्रा., सिरप आरेशाई 1 ड्राम, पानी (सब मिलाकर) 1 औंस ।

यह एक मात्रा है । दिन में 3-4 बार दें । यह मिक्श्चर ज्वर में विटामिन की कमी को दूर करता है तथा रह प्रकार के ज्वर में लाभकारी है ।

विषम-ज्वर या मलेरिया (Malaria Fever)

यह एक संक्रामक बीमारी है । एक विशेष किस्म के मच्छर द्वारा काटे जाने पर शरीर में यह रोग उत्पन्न होता है । वर्षा ऋतु में यह ज्वर अधिक फैलता है । इसमें पहले जाड़ा तथा बाद में कँपकँपी आती है । तीन-चार कम्बल ओढ़ लेने पर भी ठण्ड नहीं जाती । ठण्ड के साथ ही शरीर में दर्द, सिर में धमक, प्यास, बेचैनी आदि लक्षण प्रकट होते हैं । शीतावस्था के बाद उष्णावस्था आती है, जिसमें शीत घटकर शरीर का तापमान 106 डिग्री तक बढ़ जाता है । तीसरी अवस्था में खूब पसीना आकर ज्वर बिल्कुल उतर जाता है । कभी-कभी बिना कम्प के भी वह ज्वर चढ़ता है । मलेरिया का प्रकोप दिन में एक या दो बार तक होता है । एक दिन छोड़कर आने वाले मलेरिया-ज्वर को इकतरा, दो दिन छोड़कर आने वाले को तिजारी' तथा तीन दिन छोड़कर आने वाले को 'चौथैया' कहते हैं । तीव्र-ज्वर के साथ ही सम्पूर्ण शरीर में जलन, सिर में चक्कर आना, जी मिचलाना, जीभ का स्वाद कड़वा हो जाना, प्रायः कब्ज रहना, हाथ-पाँवों को इधर-उधर पटकना तथा कभी-कभी दस्त भी हो जाना आदि इस रोग के मुख्य लक्षण हैं ।

इसमें निम्नलिखित औषधियाँ हितकर हैं—

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) एक बड़े कागजी नीबू को चार टुकड़ों में काट लें, फिर मिट्टी के बर्तन में 6 छटाँक पानी डालकर, उसमें नीबू के कटे हुए टुकड़े भी डाल दें तत्पश्चात् बर्तन को आग पर चढ़ाकर उबालें । जब पानी एक तिहाई रह जाय, तब बर्तन को नीचे उतार लें । कुछ ठण्डा हो जाने पर नीबुओं को पानी में ही मसलकर, छान लें तथा छना हुआ रोगी को पिलादें । दिन में तीन बार इस प्रयोग को करने से ज्वर बिल्कुल दूर हो जायेगा ।

(2) नीम की छाल, सत-गिलोय, कालीमिर्च, छोटी पीपल और मुनक्का— इन सबको एक-एक तोला लें । मुनक्कों के बीज निकाल दें तथा कालीमिर्च, छोटी पीपल एवं नीम की छाल को कूट-पीस कर कपड़छन करलें । फिर सब वस्तुओं को गुलाबजल में खरल करके छोटी-छोटी टिकिया बनाकर रख लें।

ज्वर आने से 2 घण्टे पूर्व अथवा चढ़े हुए ज्वर में गरम पानी के साथ 1 टिकिया खिलाते रहने से दो-तीन दिन में ही ज्वर दूर हो जाता है ।

(3) कलौंजी 1 तोला को आग में भून लें । फिर उसमें 1 तोला गुड़ मिलाकर सेवन करें । यह विषम ज्वर के लिए अत्युत्तम योग है ।

(4) तुलसी के पत्तों के रस में कालीमिर्च का चूर्ण मिलाकर पीने से विषम-ज्वर में लाभ होता है ।

(5) गिलोय, कुटकी, नीम की छाल, धनिया, पटोलपत्र, पित्तपापड़ा, सनाय और बड़ी हरड़—इन सबको 4-4 माशे लेकर कूट लें तथा आधा सेर पानी में पकायें । जब आधा पाव पानी शेष रह जाय, तब उतार कर छान लें। इस काढ़े को निबाया-निबाया 2-2 घण्टे बाद दिन में 5 बार सेवन करते रहने से सब प्रकार के विषम-ज्वर दूर हो जाते हैं ।

(6) आक की जड़ 2 तोला तथा कालीमिर्च 1 तोला—इन्हें बकरी के दूध में पीसकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें । पारी के ज्वर में ज्वर आने से पहले एक गोली खिलादें तो वह दूर हो जायेगा । जाड़े के ज्वर में भी यह बहुत लाभकारी है ।

(7) सिरस के फूल, हल्दी और दारु हल्दी- इनके कल्क में घी मिलाकर नस्य देने से चौथैया-ज्वर दूर होता है ।

(8) सफेद चिरचिटे (अपामार्ग-ओंगा) की जड़ को दूध के साथ पीने से अथवा पान में रखकर खाने से बहुत दिनों पुराना चौथैया-ज्वर भी दूर हो जाता है ।

(9) फिटकरी को भूनकर उसके बराबर मिश्री मिलायें, आधे माशे की मात्रा में इसे खिलाने से तिजारी दूर हो जाता है तथा जिस व्यक्ति को खाँसी हो, उसे यह दवा नहीं देनी चाहिए ।

(10) पुराने बोरे की राख को शहद में मिलाकर चाटने से इकतरा तिजारी, चौथैया तथा दिन में दो बार आने वाले ज्वर भाग जाते हैं ।

(11) खुरासानी अजवायन 3 माशा तथा मुलहठी 9 माशा— इन दोनों का काढ़ा पिलाने से पारी का ज्वर दूर हो जाता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) करञ्जवा के पत्ते 1 तोला तथा कालीमिर्च 7 दाने—इन्हें पानी में पीस-छानकर कुछ दिनों तक सुबह-शाम पिलाते रहने से मलेरिया बुखार चला जाता है ।

(2) ढाक के बीजों के ऊपरी लाल छिलके दूर कर लें। फिर उनके वजन के बराबर करञ्जवा के बीज मिलाकर महीन पीस-छानकर पानी में गूँथकर, चने के बराबर की गोलियाँ बनाकर रख लें। बुखार आने से 4 घण्टे पहले 1-1 गोली 2-2 घण्टे के अन्तर से दें तो पहले ही दिन बुखार नहीं आयेगा। यदि आया भी तो बहुत हल्का आयेगा। दो-तीन दिन तक इस दवा के सेवन से इकतरा, तिजारी, चौथैया या रोज आने वाला हर प्रकार का बुखार दूर हो जाता है।

(3) मलेरिया के रोगी को अगर कब्ज हो तो उसे पहिले 7 माशा सनाय और 5 माशा सोंफ का काढ़ा बनाकर पिलाना चाहिए, ताकि उसका पेट साफ हो जाय। उसके बाद ही जाड़े के बुखार वाली दवा देनी चाहिए।

(4) फिटकरी को भूनकर तथा महीन पीसकर रख छोड़ें। मलेरिया ज्वर आने से 4 घण्टे पहले 4-4 रत्ती उक्त फिटकरी के चूर्ण को थोड़ी सी खाँड मिलाकर 2-2 घण्टे के अन्तर से खिलायें तो बुखार नहीं आयेगा।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

मलेरिया आफीशिनैलिए 30, 200— मलेरिया फैलने के दिनों में इस औषध की सप्ताह में एक-दो मात्रा ले लेने से मलेरिया-ज्वर से सुरक्षा रहती है।

ब्रायोनिया 6—ठण्ड लगने से पहले ही शरीर का गरम हो जाना, तीव्र प्यास, ज्वर की अपेक्षा ठण्ड अधिक लगना आदि लक्षणों पर।

इपिकाक 3x, 6, 30— पाकयन्त्र में खराबी के कारण उत्पन्न ज्वर, जिसमें वमन, मितली, कुछ देर जाड़ा एवं अधिक समय तक उष्णता के लक्षण दिखाई दें तथा तापमान बढ़ जाने के बाद अधिक पसीना आना, मुँह का जायका कड़वा हो जाना आदि लक्षणों में क्विनीन तथा आर्सेनिक के अपव्यवहार के कारण पुराने पड़ गये मलेरिया-ज्वर पर ही यह अधिक उपयोगी है। इस औषध के प्रायः एक बार के प्रयोग से ही लाभ हो जाता है या दूसरी औषध के ठीक चुनाव के लिए लक्षण स्पष्ट हो जाता है।

आर्सेनिक एल्बम 3 से 200 तक— पुराने विषम-ज्वर में जिनमें कि प्लीहा अथवा यकृत् बढ़ गया हो अथवा सूजन हो तो- वह विशेष उपयोगी हैं। ज्वर के साथ बेचैनी, दर्द, प्यास जल्दी-जल्दी लगना, परन्तु पानी थोड़ा ही पीना, दिन में दो-तीन बार अथवा एक-दो या तीन दिन छोड़कर आने वाला ज्वर। जाड़ा कभी कम और कभी अधिक लगना आदि लक्षणों में हितकर है।

नेट्रमम्यूर 200— ज्वर प्रातः 9 से 12 बजे के बीच आकर 4-4 घण्टे

बाद उतर जाता हो, ज्वर के समय वमन अथवा जी मचलाना आदि लक्षणों पर। जब ज्वर कम हो अथवा बिल्कुल न हो तब इसकी एक या तो मात्रायें देनी चाहिए।

विरेट्रम-एल्ब 3x— प्रातः 6 से 8 बजे के बीज आकर 4-5 घण्टे साथ ज्वर चढ़ना, अधिक देर तक ठण्ड लगना, कब्ज, सिर-दर्द तथा हाथ-पाँव में ऐंठन आदि लक्षणों पर।

फेरमफॉस— प्रतिदिन 12 से 2 बजे के बीच ठण्ड लगना तथा ज्वर का तेज हो जाना एवं रात के समय ठण्डा पसीना आना- इन लक्षणों पर। ज्वर के न होने पर औषध का 200x अथवा 1M का क्रम देने से ज्वर रुक जाता है।

पल्सेटिला 6, 12, 30— पाकाशय की खराबी से उत्पन्न ज्वर, प्रातः तीसरे प्रहर अथवा सायंकाल जाड़ा लगना, प्यास न रहना, ताप का कुछ ही समय ठहरना, हाथ-पाँवों में जलन, भोजन के बाद तन्द्रा आदि लक्षणों एवं क्विनीन के अपव्यवहार से उत्पन्न ज्वर में हितकर है।

थूजा 200— प्रातः 3-4 बजे अथवा सायंकाल 3-4 बजे खूब ठण्ड लगकर ज्वर आना, हवा में भी जाड़ा लगना, जाँघों में अधिक ठण्ड लगना शरीर का जो भाग ढँका हो उसमें ठण्ड लगना आदि लक्षणों पर।

सैड्रन 30— ज्वर का दिन में 1-2 बजे एकदम ठीक समय पर आना तथा उसी समय ठण्ड लगना शुरू होना, हाथ-पाँवों में दर्द की अधिकता आदि लक्षणों पर।

चिनिनम-आर्स 30— ज्वर का प्रायः तीसरे प्रहर आना, ठण्ड अधिक लगना, अग्नि पर तापने की इच्छा, गरम पानी अच्छा लगना, कमजोरी की अधिकता तथा पसीना आ जाने पर चैन मिलना आदि लक्षणों पर।

एपिसमेल 30— दिन के 3 बजे सर्दी लगना, प्यास न रहना, गर्मी का बुरा तथा ठण्डी हवा का अच्छा लगना, शरीर में पित्ती उछलना, पेशाब कम तथा गहरे रङ्ग का होना, पसीना अधिक न आना, ठण्ड के समय थोड़ी प्यास तथा ठण्डा पानी पीने की इच्छा आदि लक्षणों पर।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) क्विनीन-सल्फ 16 ग्रेन, हाइड्रोब्रोमिक डिल $1\frac{1}{2}$ ड्राम, लाइकर, आर्सेनिक हाइड्रोक्लोर 8 बूँद, टिंक्चर क्लोरोफार्म 40 बूँद, टिंक्चर नक्सवोमिका 1 ड्राम तथा डिस्टिल वांटर 8 औंस।

ज्वर आने से पूर्व हर एक घण्टे पर 1-1 औंस की 4 मात्राएं पिलायें यह मलेरिया में हितकर है ।

(2) टिंक्चर चिरायता 1 औंस, क्विनीन, 25 ग्रेन, नक्सवोमिका एक्सट्रैक्ट, 2 ग्रेन तथा लाइकर आर्सेनिक 15 बूँद । सबको मिला लें । 24 खुराक औषध मानकर आधी छटाँक पानी के साथ दिन में 3 बार सेवन करते रहें ।

(3) भुनी फिटकरी (एलम) 2 ड्राम, आर्सेनिक 1 ग्रेन तथा पाउडर कैप्सिकम 6 ग्रेन सबको खरल करके गोंद के पानी में 24 टिकिया बना लें । प्रतिदिन 1-1 टिकिया दिन में 3 बार सेवन करते रहने से पुराना मलेरिया दूर हो जाता है ।

(4) मलेरिया-ज्वर में निम्नलिखित इञ्जेक्शन भी हितकर हैं, इन्हें डाक्टर के परामर्शानुसार प्रयोग करें—

मेरोफ्रेन, क्विनीन बाई हाइड्रोक्लोराइड, सोडियम कोकाडिलेट पैल्ड्रीन, मैफसीइड मैपोकेन, मेथिनो सल्फेट आदि ।

आन्तरिक-ज्वर या टाइफाइड (Typhoid Fever)

इसे 'मोतीझरा' के नाम से भी पुकारा जाता है । यह रोग प्रायः भोजन की अशुद्धता एवं कुपथ्य से होता है । इसमें छोटी आँत में जख्म हो जाते हैं । इस रोग में ज्वर हर समय बना रहता है । सामान्यतः प्रातः 99 डिग्री एवं सायंकाल 100 डिग्री तापमान बना रहता है । कभी-कभी इससे अधिक भी बढ़ जाता है । इस ज्वर में रोगी प्रायः प्रलाप भी करने लगता है अथवा बेहोश हो जाता है । कभी-कभी खाँसी भी उठती है तथा पेट में हल्का दर्द-सा भी बना रहता है । रोग की अधिकता में छाती, गला, पेट, जाँघ आदि स्थानों पर छोटी-छोटी सफेद रङ्ग की चमकदार फुन्सियाँ भी निकल आती हैं । इसके रोगी के शरीर से एक विशेष प्रकार की गन्ध निकलती है, जिसके कारण चतुर चिकित्सक तुरन्त ही इसकी पहिचान कर लेते हैं । पेशाब का रङ्ग लाल हो जाता है तथा उसकी मात्रा में कमी आ जाती है । जीभ के अग्रभाग पर मैल भी जम जाता है । इस रोग के साथ ही न्युमोनिया हो जाना बहुत खराब लक्षण है । सामान्यतः यह रोग दो सप्ताह तक बढ़ता है तीसरे सप्ताह के प्रारम्भ में ज्वर कम होने लगे तो उसे शुभ और यदि बढ़ने लगे तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए । सामान्यतः चौथे सप्ताह में रोग स्वयं ही ठीक हो जाता है ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

न्युमोनिया, दस्त, रक्ताधिक्य आदि की शिकायत हो जाने पर तुरन्त ही किसी अनुभवी चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिए । रोग की सामान्य अवस्था में निम्नलिखित उपचार हितकर सिद्ध होते हैं-

(1) रोगी को पूर्ण शान्त रहने दें, कुछ भी न खिलायें, कड़ा उपवास करने दें, रोगी यदि दुर्बल हो तो दाने निकल आने पर धान की खील अथवा गाय या बकरी का उबला हुआ दूध थोड़ी मात्रा में दिया जा सकता है । दो-चार दिन बाद पेट में मल की गाँठें बँध जाती हैं, उन्हें निकलने के लिए मुनक्के का काढ़ा या सुहाते गुनगुने पानी का ऐनीमा दिया जा सकता है । ग्लैसरीन की बत्ती का प्रयोग करना भी ठीक रहता है । 10 लौंग डालकर पानी को गरम करें । जब सेरभर पानी 6 छटाँक रह जाय, तब उसे ठण्डा कर, तीन-तीन घण्टे के अन्तर से थोड़ा-थोड़ा रोगी को पिलाते रहें । इससे प्यास तथा बेचैनी में कमी आयेगी ।

(2) लौंग, ब्राह्मी, वायबिडङ्ग तथा हंसराज प्रत्येक 3-3 माशा तथा मुनक्का 7 नग—इन सबको कूट-पीसकर 4 छटांक पानी में डालकर इतना पकायें कि वह 1 छटाँक रह जाय । यह एक मात्रा हुई । ऐसी तीन मात्रायें दिन भर में तीन बार रोगी को दें । 12 वर्ष से कम आयु वाले बच्चे तथा शिशुओं के लिए इस काढ़े की मात्रा में और भी कमी कर देनी चाहिए, यदि रोगी को दस्त हो रहे हों तो मुनक्के के स्थान पर 3 माशा नागरमोथा लेना चाहिए । इस काढ़े को पिलाते रहने से रोगी को चैन मिलता है ।

(3) बरगद के वृक्ष की कोमल तथा बाजरे का काढ़ा पीने से मोतीझरा में लाभ करती है ।

(4) नागरमोथा, पित्तपापड़ा, मुलहठी तथा कालीदाख के काढ़े में शहद मिलाकर पीने से मोतीझरा में लाभ होता है ।

(5) गले में सच्चे मोतियों की माला पहिनने से भी गले तथा छाती पर निकलने वाले दानों में बहुत लाभ होता है ।

(6) गिलोय के काढ़े में शहद मिलाकर पीने से भी मोतीझरा में लाभ होता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) उन्नाव 2 दाने, मुनक्का 3 दाने खूबकला 3 माशा और मिश्री 1

तोला— इन सबको आधा पाव पानी में उबाल कर छान लें तथा थोड़ा-थोड़ा करके दिन में 2-3 बार पिलायें । यदि खाँसी हो तो इस नुस्खे में 1 माशा मुलहठी बढ़ा दें । अगर कब्ज अधिक हो तो—1 टुकड़ा अज्जीर भी मिलाया जा सकता है ।

अगर सातवें दिन भी दाने न निकलें या कम निकलें और बुखार तथा बेचैनी रहे तो मुनक्के की गुठली निकाल कर, उसमें आधा रत्ती केसर रखकर गोली-सी बनाकर, रोगी बच्चे को निगलवा दें, अथवा तुलसी के पत्ते 7 नग, केसर 2 रत्ती और कालीमिर्च 7 दाने पीसकर 21 गोलियाँ बनाये । उनमें से 1-1 गोली दूध में घोलकर बच्चे को दें । इसके दाने जल्दी निकल आयेंगे और बुखार उतर जायगा । अगर बड़ी उम्र के मनुष्य को यह रोग हुआ हो तो उसे ये दवाएं कुछ अधिक मात्रा देनी चाहिए ।

(2) खूबकला 5 तोला, 5 सेर पानी में उबालें, फिर रोगी को चारपाई पर लिटाकर या कुर्सी पर बैठाकर चादर उढ़ा दें । सिर्फ मुँह खुला रखें, तत्पश्चात् चारपाई या कुर्सी के नीचे काढ़े वाले बर्तन को रख दें । उसकी भाप लगने से मोतीझरा के दाने जल्दी निकल जायेंगे और बुखार भी उतर जायगा दानों के जल्दी निकलने पर भी यह उपाय ठीक रहेगा ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

टायफोयेडियम 200— यह रोग की प्रतिषेधक औषध है । मौसम के दिनों में सप्ताह में इसकी 1 मात्रा लेने से रोग होने का भय नहीं रहता । यह औषध रोग के आरम्भ से अन्त तक लाभ करती है ।

ब्रायोनिया 30— यह औषध दानों को निकलने में सहायक है । प्याज की तीव्रता, छाती तथा शरीर में दर्द, भूख न लगना, खाँसते समय छाती में दर्द— जिसके कारण रोगी छाती को पकड़ लेता हो एवं मुँह का स्वाद तीता हो जाना आदि लक्षणों पर हितकर है ।

जेल्सीमियम 30—सदैव एक-सा बना रहने वाला ज्वर, शरीर में तीव्र दर्द, चुपचाप पड़े रहना, कमजोरी आदि लक्षणों पर हितकर है । बच्चों के लिए विशेष लाभ करती है ।

रसटाक्स 30— अधिक बैचैनी, बार-बार करवट बदलना, जीभ के अग्रभाग का लाल हो जाना, पतले दस्त, पेट में गुड़गुड़ाहट, कमर में अधिक दर्द, छटपटाना, दुर्गन्धित एवं रक्त-मिश्रित दस्त, स्वप्न देखना आदि लक्षणों पर।

आर्सेनिक 3x, 30— छटपटाना, गहरी सुस्ती, तीव्र ज्वर एवं प्यास जीभ

का रङ्ग लाल हो जाना, शरीर में फुन्सियाँ निकलना, धड़ के अतिरिक्त हाथ-पाँवों का हिलना त्वचा का रूखा हो जाना, ठण्डा पसीना, आधी रात के बाद रोग बढ़ना आदि रोग-वृद्धि की अवस्था में हितकर है ।

हायोसायमस 30, 200— रोग की अन्तिम अवस्था, जबकि नाड़ी तीव्र हो तथा अङ्गों का भड़कना, चेहरे का गरम हो जाना, प्रलाप, भ्रम, अनजाने में मल-मूत्र का विसर्जन, दाँतों का किटकिटाना, जगने पर ठीक-ठीक उत्तर न देना, कपड़े उतारकर नङ्गा हो जाना आदि लक्षणों में ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) लाइकर एमौन साइट्रेट 2 ड्राम, सोडिआई क्लोरास 5 ग्रेन, सोडिआई सल-ओकार्बोनास 3 ग्रेन, टिंक्चर ओरेन्शिआई फ्लोरिस 10 ग्रेन, एकुआ ओरेन्शिआई (कुल मिलाकर) 1 औंस ।

यह एक खुराक हुई । दिन में 3 ऐसी खुराक दें ।

(2) ऑयल ऑफ टारपेण्टाइन 1 ड्राम, लाइकर पुटासी 1 ड्राम, न्युसिलेज ऑफ गम ऐकेशिया 2 ड्राम, सिरप ऑफ पॉपीज 4 ड्राम, सिरप ऑफ ओरेञ्ज 4 ड्राम तथा कैम्फर वाटर 5 औंस ।

सबको मिलाकर रख लें मात्रा आधा औंस 1 प्रति 2 घण्टे बाद पिलाते रहें ।

(3) निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ टाइफाइड में लाभ करती हैं-

क्लोरोमायसेटिन, क्लोरेम्फेनिकल, इण्टेरोमायसेटिन, बायोमायसेटिन, क्लोरेम्फाइसिन तथा अम्ब्रासिन्थ ।

निम्नलिखित इञ्जेक्शन टायफाइड में उपयोगी हैं-

क्लोरोमाइसेटिन सक्सिनेट, इण्टेरोमायसेटिन तथा गुइकोमायसेटिन ।

पेटेण्ट औषधियों तथा इञ्जेक्शनों का प्रयोग डाक्टर के परमार्शानुसार ही प्रयोग करें ।

चेचक (Small Pox)

यह संक्रामक तथा विस्फोटक-ज्वर है । इसमें पहले चार-छः दिन तक तीव्र-ज्वर आता है, फिर चौथे या आठवें दिन शरीर पर छोटे-छोटे सफेद दाने दिखाई देते हैं । इन छोटे दानों को 'खसरा' कहा जाता है, यह रोग प्रायः बच्चों को अधिक होता है । जिसमें बड़े दाने निकलते हैं, उसे शीतला, चेचक अथवा बड़ी माता कहा जाता है ।

आयुर्वेद के अनुसार यह रोग अपने आप अच्छा होने वाला है, अतः इसमें औषध देने की आवश्यकता नहीं होती । आरम्भिक लक्षणों के बाद तीसरे या चौथे दिन रोगी के शरीर पर पहले मस्तक, गर्दन तथा छाती में लाल चिह्न से दिखाई देते हैं । फिर ये चिह्न सम्पूर्ण शरीर में फैल जाते हैं और 48 घण्टों के भीतर दाने उभर कर द्रव पदार्थ भर जाता है । फिर 48 घण्टे में पीव पैदा हो जाता है । यह समय बड़ा भयानक कष्ट का होता है । प्रायः ग्यारहवें दिन दाने सूखने लगते हैं और उन पर खुरण्ड पैदा हो जाते हैं । 3-4 दिन में खुरण्ड झड़ जाते हैं तथा रोगी ठीक हो जाते हैं ।

चेचक के दाने, आँख, जीभ, नाक आदि के भीतर भी निकलते हैं और उनमें खुजली भी मचती है । इन दानों को खुजाने से आँखों के मारे जाने तथा शरीर के कुरूप हो जाने का खतरा रहता है, अतः इन्हें खुजाना नहीं चाहिए। चेचक के दाग प्रायः जीवन भर बने रहते हैं ।

रोगी के विश्वास तथा आराम के लिए इस रोग में निम्नलिखित उपचार करने चाहिए :-

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) चेचक के दाने निकलने से पहले ही गधी का दूध पिलाने से या तो चेचक निकलती ही नहीं और यदि निकलती भी है तो बिना किसी उपद्रव के शान्त हो जाती है ।

(2) असली रुद्राक्ष को घिसकर पिलाने से शीतला का प्रभाव दूर हो जाता है ।

(3) शीतला के दाने निकल आने पर रोगी को मुनक्के खिलाने चाहिए तथा केशर मिश्रित दूध पिलाना चाहिए ।

(4) नीम के सूखे पत्तों तथा हल्दी को कपड़छन कर लें । इसी को कण्डों की राख को छानकर मिला लें । इस मिश्रण को रोगी के बिस्तर पर अच्छी तरह बिछा दें । इससे दानों के फूट जाने पर भी रोगी को अधिक कष्ट नहीं होता तथा दाने शीघ्र ही सूख भी जायेंगे ।

(5) पटोल-पत्र, गिलोय, नागरमोथा, अडूसा, धनिया, जवासा, चिरायता, नीम, कुटकी और पित्तापापड़ा- इन सबको समभाग लेकर, काढ़ा बनाकर पीने से बिना पकी शीतला नष्ट हो जाती है तथा पकी-हुई शीतला शुद्ध हो जाती है । विस्फोट ज्वर (चेचक का बुखार) को शान्त करने के लिए यह सर्वोत्तम औषध है ।

(6) सिरस की छाल, पीपल के वृक्ष की छाल, लिसौड़े के वृक्ष की छाल तथा गूलर के वृक्ष की छाल— इन सबको कूट-पीस छानकर, गाय के घी में मिलाकर चेचक के दानों पर लगाने से उनकी दाह या जलन अवश्य शान्त हो जाती है ।

(7) पाँव के तलवों की फुन्सियों में जलन हो तो चावलों का पानी बनाकर उन पर सींचना चाहिए । आधा पाव चावलों को आधा सेर पानी में रात को भिगो दें । प्रातःकाल उसे छानकर प्रयोग में लें । चावलों को दो-तीन घण्टे तक पानी में भिगोने से भी सींचने योग्य जल तैयार हो जाता है ।

(8) मुलहठी तथा गदहपूर्ना को पीसकर पानी में घोलकर छान लें । इस पानी से प्रतिदिन आँखों को सींचते रहने से, शीतलता के कारण आँखों को किसी प्रकार की हानि पहुँचने का खतरा नहीं रहता ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) उन्नाव 2 दाने, खूबकलाँ 3 माशा और मिश्री या चीनी 6 माशा— इन्हें पानी में उबाल कर रोगी को पीने के लिए दें । अगर कब्ज हो तो नुस्खे में 3 दाने मुनक्का तथा 1 दाना अञ्जीर का और बढ़ा दें । अगर खाँसी हो तो इस नुस्खे में 1 माशा मुलहठी बढ़ा दें ।

(2) खमीरा मरवारीद एक-एक मात्रा चाटने से रोगी को बहुत आराम मिलता है ।

(3) चेचक के दाने निकलने लगें, तब कोई ठण्डी या दस्तावर दवा नहीं देनी चाहिए और न रोगी को ठण्डी हवा ही लगने देनी चाहिए ।

(4) दानों में खुजली हो तो झाऊ के पत्तों तथा भोजपत्र की धूनी शरीर को देनी चाहिए । इससे खुजली कम हो जायगी तथा खुरण्ड जल्दी सूखकर उतर जायेंगे ।

(5) दानों के सूख जाने और खुरण्ड बँध जाने पर उन पर गाय का घी या तिल का तैल लगायें । इससे खुरण्ड जल्द उतर जायेंगे । बाद में भी इस घी या तेल को कुछ दिनों तक लगाते रहें । इससे निशान गहरे और भद्दे नहीं हो सकेंगे ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

वेक्सीनिनम 6x **वि०**, 30— यह इस रोग की प्रतिषेधक औषध है । जिन दिनों यह बीमारी फैल रही हो, उन दिनों इस औषध की केवल 1 मात्रा

लेने से ही रोग होने का भय नहीं रहता । एक प्रकार से चेचक का टीका लगने जैसा काम हो जाता है । **वैरयोलिनम** 30 अथवा **मलेण्ड्रिनम** 30 को सप्ताह में एक-दो बार सेवन करने रहने से भी यही लाभ होता है ।

इस बीमारी की विभिन्न अवस्थाओं में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ हितकर सिद्ध होती हैं । लक्षणों को भली-भाँति देखकर ही इन औषधियों का प्रयोग करना चाहिए । पोटेन्सी तथा मात्रा आवश्यकतानुसार निश्चित कर लेनी चाहिए ।

(1) ज्वर की प्रारम्भिक अवस्था में—**थूजा, विरेट्रम-विरिडि, बैप्टीशिया, एकोनाइट** ।

(2) दाने निकलने पर—**रसटाक्स, एण्टिम-टार्ट, सैरासिनिया** ।

(3) दानों में मवाद पड़ जाने पर—**एण्टिम-टार्ट, मर्क्यूरियस** ।

(4) दानों के बैठ जाने पर—**सल्फर, थूजा, कैम्फर** ।

(5) गले में सूजन तथा आँखें बन्द होने पर—**बेलाडोना** ।

(6) आँखों में जलन होने पर—**सल्फर, मर्ककोर** ।

(7) प्रलाप अधिक होने पर—**विरेट्रम-विरिडि, स्ट्रैमो** ।

(8) दानों के पकते समय सन्निपात ज्वर के लक्षण प्रकट होने पर—**रसटाक्स** ।

(9) दानों के निकलते समय, दानों के धीरे-धीरे निकलने पर, दानों के काले पड़ जाने पर तथा मितली, वमन, गले में घरघराहट एवं निद्रालुता के लक्षणों पर—एण्टिम-टार्ट ।

(10) नींद न आने तथा बेचैनी पर—**काफिया** ।

(11) दानों में मवाद भर जाने पर 1 भाग बोरिक-एसिड में 20 गुना जैतून का तेल (ऑलिव ऑयल) मिलाकर सम्पूर्ण शरीर पर लेप कर देना चाहिए । इससे खुजली कम होती है ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

चेचक न निकले, इसलिए प्रतिषेधक टीके लगाये जाते हैं । परन्तु चेचक के दाने निकल आने के बाद मुख्यतः उनके लिए किसी औषध का प्रयोग नहीं किया जाता । यदि चेचक के साथ ही कोई अन्य विकार भी प्रकट हों अथवा रोग के कारण रोगी को अधिक व्याकुलता हो तो उस समय चिकित्सक की राय के अनुसार उपचार करना चाहिए ।

फुफ्फुस-प्रदाह या न्युमोनिया (Pneumonia)

गर्मी-सर्दी के असन्तुलन, अधिक सर्दी लग जाना, ओस में सोना, आदि कारणों से यह रोग होता है । इसमें पहले जाड़ा लगकर ज्वर आता है तथा शरीर का तापमान 102 से 107 डिग्री तक बढ़ जाता है । सिर में दर्द, वमन तथा खाँसी आदि उपसर्ग प्रकट होते हैं तथा श्वास लेने में कष्ट होता है । इस रोग का मूल कारण एक प्रकार के कीटाणु हैं । यह संक्रामक तथा खतरनाक बीमारी है जो बड़ी तेजी से बढ़ती है । छोटे बच्चों को यह रोग अधिक होता है । इस रोग के लक्षण प्रकट होते ही किसी सुयोग्य चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिए । रोग बढ़ जाने पर असाध्य हो जाता है और रोगी की कुछ ही घण्टों में मृत्यु भी हो सकती है । अतः इस रोग को बहुत जटिल समझकर तुरन्त ही समुचित चिकित्सा करनी चाहिए । इस रोग में खाने के साथ मालिश की औषध का भी व्यवहार करना आवश्यक है । जहाँ योग्य-चिकित्सक उपलब्ध न हों, वहाँ निम्नलिखित औषधोपचार करना चाहिए ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) रोगी को अन्धेरी अथवा ठण्डी वाली जगह में न रक्खें । रोगी के कमरे में धुँआ भी नहीं होना चाहिए । रोगी के फेफड़ों को हर आधा घण्टे बाद रुई के फाहे से सेकते रहें, परन्तु हृदय को बचाये रक्खें । पाँवों को गरम पानी की बोतल से सेकें । रोगी को श्वास लेने में कठिनाई हो तो उसकी छाती को कुछ ऊँचा रक्खें, परन्तु उसे पीठ के बल अर्थात् चित्त ही लिटायें । रोही को हल्के तथा गरम कपड़े पहनाने चाहिए । रोगी की छाती तथा पसलियों पर जैतून अथवा तारपीन के तैल मालिश कर, रुई द्वारा सेकें तथा उस स्थान को रुई से दबाकर बाँध दें, रोगी को पूर्ण विश्राम एवं नींद लेने दें ।

(2) तुलसी के पत्ते 22 तथा कालीमिर्च 15 अदद लेकर दोनों को चटनी की भाँति पीस लें । फिर 4 छटाँक पानी को आग पर चढ़ाकर उबालें जब दो छटाँक पानी शेष रह जाय, तब उसे उतार कर छान लें तथा उसमें पूर्वोक्त चटनी मिलाकर रोगी को गुनगुना रहते ही पिला दें दिन में कई बार ऐसा करते रहने से निमोनिया का प्रभाव दूर हो जाता है ।

(3) बारहसिङ्गा का सींग 5 तोला को घीग्वार अर्थात् ग्वारपाठे के लुआव 6 तोला में रखकर ऊपर से कपड़ मिट्टी करके सुखा लें । फिर उसे 10 सेर उपलों के बीच में रखकर फूँक दें । इस प्रकार बारहसिङ्गा की भस्म तैयार हो

जायगी । उस भस्म को 1 से 2 रत्ती तक की मात्रा में शहद के साथ दिन में तीन-चार बार चाटने से पसली का दर्द शीघ्र शान्त हो जाता है । निमोनिया की यह श्रेष्ठ औषध है । 'श्रङ्ग-भस्म' नाम से तैयार भी मिलती है ।

(4) असली सिन्दूर को असली शहद में मिलाकर घोंट लें । साथ में थोड़ा कपूर भी डाल लें । फिर जितने स्थान में दर्द हो, उतना ही बड़ा सफेद कपड़ा लेकर,-उसके ऊपर उक्त मिश्रण का लेप करें तथा उस कपड़े को दर्द वाले स्थान पर चिपकाकर ऊपर से पट्टी बाँध दें । इससे पसलियों का दर्द दूर हो जायगा ।

(5) सफेद फिटकरी तथा अच्छी कालीमिर्च— दोनों को 1-1 तोले लें और पीसकर कपड़छन करलें । उसे शीशी में भरकर डाट लगाकर रख दें । 1 तोला शहद में 3 माशे इस चूर्ण को मिलाकर रोगी को चटा दें । यदि एक मात्रा से आराम न हो तो 40 मिनट बाद ही दूसरी मात्रा दे दें । इससे पसली के दर्द में तुरन्त आराम होगा ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) बारहसिंहा का सींग 1 तोला लेकर, उस पर अजवायन और शोराकलमी 1-1 तोला को थोड़े-से पानी में पीसकर लेप कर दें । फिर उसे 2 सेर कोयलों की आग रक्खें । जब आग ठण्डी हो जाय, तब बारहसिंघे के सींग की डली को निकालकर महीन पीस लें । निमोनिया तथा पसली के दर्द में इस चूर्ण को 2 से 4 रत्ती तक की मात्रा में एक तोला शुद्ध शहद में मिलाकर सुबह-शाम चटायें तथा बारहसिंघे के सींग को पानी में घिसकर, उसमें थोड़ी-सी कालमिर्च पीसकर हल्का गरम करें और उसे दर्द वाली जगह पर लगायें । इससे लाभ होगा ।

(2) तारपीन के तेल की मालिश करने से निमोनिया तथा पसली के दर्द में बहुत फायदा होता है ।

(3) अरण्ड की जड़ 6 माशा तथा सोंठ 3 माशा को पानी में उबाल कर छान लें । फिर उसमें 2 तोला शहद मिलाकर रोगी को पिलायें ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

एकोनाइट 3x, 6—यह औषध रोग की प्रारम्भिक-अवस्था में हितकर है ।

ब्रायोनिया 3, 6, 30— छाती, पार्श्व, सम्पूर्ण शरीर में दर्द, हिलने डुलने से दर्द बढ़ना, तीव्र प्यास, सूखी खाँसी, जीभ पर पीला या मोटा लेप चढ़ जाने की स्थिति में ।

फास्फोरस 6, 30— खाँसते समय दर्द, छाती में तीव्र वेदना, श्वास में आरी चलने जैसी आवाज, श्वास-कष्ट के कारण पानी भी न पी सकना—इन लक्षणों में । बच्चों के न्युमोनियाँ में शीघ्र लाभदायक है ।

एण्टिमटार्ट 3, 12— श्वास-नली में प्रदाह, कफ का अधिक घरघराना परन्तु उसके बाहर निकालने में अत्यधिक कष्ट, वमन, मिचली अत्यधिक-बेचैनी, चेहरे का काला-पीला पड़ जाना, नाड़ी की चाल का बढ़ना, परन्तु शारीरिक-ताप का कम हो जाना आदि लक्षणों पर ।

लाइकोपोडियम 12, 30— रोग की तीसरी अवस्था, टाइफाइड के साथ न्युमोनिया । अधिक बलगम निकलना एवं यकृत् की गड़बड़ी के लक्षणों में । बायीं ओर के न्युमोनिया में विशेष हितकर है ।

बेलाडोना 30— चेहरे तथा आँखों का लाल हो जाना, अनिद्रा, सिर में रक्ताधिक्य, सोते में चौंक पड़ना आदि लक्षणों में ।

सल्फर 30— छाती में कफ का धड़कना, श्वासावरोध जैसी स्थिति, शरीर में दाह, खाँसी सिर का गरम होना आदि लक्षणों में ।

रसटाक्स 6— त्वचा का सूखी एवं गरम होना, तन्द्रा, अत्यन्त बेचैनी कम सुनाई देना, अनजाने में पेशाब निकल जाना आदि लक्षणों पर ।

आर्सेनिक 6— अत्यधिक बेचैनी चेहरे का फीका पड़ जाना, तीव्र प्यास के कारण बार-बार पानी माँगना, परन्तु एक साथ अधिक पानी न पी सकना आदि लक्षणों पर ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) सल्फा डायाजिन एक टेबलेट, एम. बी. 693 एक टेबलेट, सोड़ा-बाईकार्ब 5 ग्रेन, कोपिलन आधी टेबलेट, सीलिन 100 मि. ग्रा. वाली एक टेबलेट तथा बेरिक 10 मि. ग्रा. वाली एक टेबलेट ।

इन सबके पीसकर 8 पुड़िया बनालें । हर 3 घण्टे बाद 1-1 पुड़िया देते रहें । चौबीस घण्टे के अन्दर 8 पुड़ियाँ खिलादें ।

(2) एमोन-कार्ब 3 ग्रेन, स्प्रिट अमोनिया, अमोनिया एरोमेटिक 20 बूँद, स्प्रिट केलीपुट 15 बूँद, टिंक्चर मिला 5 बूँद तथा इन्फ्यूसन सिनेगा (कुल मिलाकर) 1 औंस ।

यह एक खुराक है । दिन में कुल 4 खुराक हर 4 घण्टे बाद दें ।

(3) निमोनिया में निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ लाभ करती हैं—

टेरामाइसिन, फीनोसिन, एक्रोमाइसिन, ओरासिन, के. सुवामाइसिन तथा टरोथ्रोसिन ।

(4) न्युमोनियाँ में निम्नलिखित इञ्जेक्शन लाभकारी हैं—

एनासिन, टेरामाइसिन, सड्रीनेलिन, स्ट्रोफेन्थीन, कोरामीन, डिलेनोन ऐण्टीन्यूमोकोकस, सल्फा पायोराडीन, डियाक्लीन, क्विनीन, सोडियम सल्फाथियाजोल तथा न्यूमाकोकस बेक्सीन ।

ग्लूकोज, डिजिटेलिस तथा कैम्फर आदि इञ्जेक्शन भी आवश्यकतानुसार दिये जाते हैं ।

(5) निम्नलिखित बैक्सीन न्युमोनिया में हितकर हैं—

वैक्सीन टाइफाइड फायलाकोजन—आरम्भ में इसके 5 इञ्जेक्शन हाइपोडर्मिक प्रणाली से, बाद में इण्ट्रावीनस प्रणाली से लगाये जाते हैं । मात्रा-1 से 5 सी. सी. तक । यह टाइफाइड में भी लाभ करती है ।

वैक्सीन न्युमोनिया फायलाकोजन—इसके इञ्जेक्शन भी पूर्वोक्त वैक्सीन की प्रणाली से लगाये जाते हैं । यह न्युमोनिया की सबसे भयानक अवस्था में लाभ करती है ।

खाँसी या कास (Cough)

कुपथ्य, नाक में धूल अथवा धुँए के प्रवेश आदि कारणों से खाँसी उठती है । यह कोई स्वतन्त्र रोग न होकर, अन्य रोगों का लक्षण मात्र है, परन्तु कुछ दिनों तक स्थायी रहने पर यह अन्य अनेक रोगों को उत्पन्न कर देती है । खाँसी मुख्यतः दो प्रकार की होती है— (1) सूखी तथा (2) तर, अर्थात्—कफ वाली । नयी खाँसी प्रायः सूखी होती है, पुरानी हो जाने पर वह कफ वाली बन जाती है । खाँसी की एक किस्म कुकर-खाँसी भी है, जो प्रायः 2 से 15 वर्ष तक की आयु के बच्चों की होती है । इस खाँसी के साथ एक लम्बी-सी आवाज आती है तथा मुँह खुल जाता है । यह खाँसी बहुत कठिन होती है । इसमें खाँसते-खाँसते वमन भी हो जाता है तथा बहुत खाँसने पर भी कच्चे झागदार थूक के अतिरिक्त कफ नहीं निकलता ।

खाँसी के रोगी को तेल, खटाई, गुड़, लालमिर्च तथा चिकनाई वाली वस्तुओं का सेवन एवं धूम्रपान नहीं करना चाहिए । इसमें निम्नलिखित उपचार हितकर है ।

(1) हल्दी 1 तोला, सज्जीखार 3 माशा तथा पुराना गुड़ 1 तोला—इन सबको मिलाकर बेर के बराबर की गोलियाँ बना लें । इन गोलियों को मुँह में रखकर चूसते रहने से हर प्रकार की, विशेषकर प्रतिवर्ष जाड़े के दिनों में रहने वाली खाँसी में लाभ होता है ।

(2) अदरक का रस, पान का रस तथा शहद—इन तीनों को समभाग मिलाकर, तीन-तीन मासे की मात्रा में दिन 3-4 बार चाटने के सामान्य खाँसी में शीघ्र लाभ होता है ।

(3) मुलहठी और उन्नाव के सत को समभाग लेकर मुँह में डालकर धीरे-धीरे चूसते रहने से खाँसी में लाभ होता है ।

(4) कालीमिर्च, पीपल तथा सोंठ—इन्हें समभाग लेकर चूर्ण बनावें । इस चूर्ण को एक-एक माशे की मात्रा में, दिन में 3-4 बार शहद मिलाकर चाटने से खाँसी में लाभ होता है ।

(5) 1 तोला गुड़ को 2 तोला गाय के घी के साथ मिलाकर खाने से सूखी-खाँसी में लाभ होता है ।

(6) कमलगट्टे की गिरी को पीसकर शहद के साथ चाटने से सूखी - खाँसी में तुरन्त लाभ होता है ।

(7) रीठे के छिल्के को खूब महीन पीसकर पानी अथवा गुलाबजल के संयोग से मूँग के बराबर की गोलियाँ बना लें । दो गोली गुलाब के अर्क के साथ दें । इससे कुकर-खाँसी के कारण होने आले दस्त तथा वमन बन्द हो जाते हैं । जब तक दूषित द्रव्य बाहर न निकल आये, तब तक वमन और दस्त बन्द नहीं करने चाहिए ।

(8) एक मिट्टी की छोटी-सी हाँडी में आक (मदार) के फूल डालकर ऊपर से पिसा हुआ सेंधा नमक छोड़ दें । उसके ऊपर फिर आक के फूल भरकर, पुनः नमक छिड़कें । जब तक हाँडी भर न जाय, तब तक इसी प्रकार नमक की पर्त लगाते हुए आंक के फूलों से हाँडी को भरकर आग पर चढ़ा दें । जब वह लाल हो जाय, तब हाँडी को नीचे उतार कर ठण्डा कर लें । फिर उसमें से आक के फूल निकालकर पीस लें तथा शीशी में भरकर रख लें ।

इस चूर्ण को 3 से 4 रत्ती तक की मात्रा में दिन में 3-4 बार शहद के साथ चाटते रहने से कुकर-खाँसी एक सप्ताह में ही समाप्त हो जाती है ।

यूनानी चिकित्सा

(1) तम्बाकू का गुल (जो हुक्का पीने के बाद चिलम में बचा रहता है।) को इकट्ठा करके इतना जलायें कि वह सफेद राख हो जाय इस राख को 1 या 2 रत्ती मात्रा मे पान में रखकर खिलाने से बलगमी-खाँसी और बलगमी-दमा में लाभ होता है ।

(2) हल्दी 1 माशा और सज्जी 3 माशा—इन दोनों को पीसकर तथा पानी में गूँथकर जङ्गली-बेर के बराबर की गोलियाँ बनाकर रख लें । 1-1 गोली सुबह-शाम खिलाने से बलगमी-खाँसी में लाभ होता है ।

(3) अमलतास का गूदा 5 तोला को पानी में घोलकर छान लें फिर उसमें 1 पाव चीनी मिलाकर आग पर पकायें, जब क्वाम बन जाय, तब उतार लें। दिन में 6-6 माशे की मात्रा में 3-4 बार चटाने से हर तरह की खाँसी दूर होती है तथा कब्ज भी नहीं रहता ।

(4) हालौन 2 तोला को पीसकर शहद 6 तोला में मिला लें । दिन में 4 बार 6-6 माशे की मात्रा में सेवन करने से बलगम निकलकर सीना साफ हो जाता है । यह बलगम खाँसी में बहुत फायदेमन्द है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

एकोनाइट 3x, 6— नयी सूखी-खाँसी, जो चित्त लेटने पर, विशेषकर रात के समय बढ़ जाती हो । गले के भीतर खरखराहट तथा ठण्डा पानी पीने की इच्छा आदि लक्षणों पर ।

इपिकाक 30— सीने में बलगम जमा होने पर भी खाँसते समय न निकलना, श्वास लेने में कष्ट, दुर्गन्धयुक्त कफ, मिचली, वमन, स्वर-भङ्ग, हाथ-पाँव का अकड़ना आदि लक्षणों पर । बच्चों की काली-खाँसी में विशेष हितकर है ।

एण्टिम टार्ट—छाती में कफ घड़घड़ाना, परन्तु बाहर निकालने की शक्ति न रहना, दम फूलना व तीव्र खाँसी के लक्षणों में ।

कैमोमिला 12—सूखी-खाँसी, रात में सोते समय खाँसी का बढ़ना, स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाना—इन लक्षणों पर ।

लैकेसिस 30— गले में जख्म, कफ का कष्टपूर्वक निकलना, छाती पर हाथ में दबाने से खाँसी उठना ।

हिपर सल्फर 6— सर्दी लगने से बढ़ने वाली पुरानी-खाँसी, स्वर - भङ्ग

के साथ खाँसी, तरल-खाँसी, दिन में कफ अधिक निकलना तथा रात्रि में न निकलना ।

कैल्केरिया-कार्ब 6— पहली नींद के बाद ही सूखी-खाँसी उठना, दिन में मीठे स्वाद वाला पीव जैसा दुर्गन्धियुक्त पतला बलगम निकलना, छाती में घरघराहट आदि लक्षणों पर ।

मर्कसोल 6— चिकने बलगम वाली तथा रात्रि में बढ़ जाने वाली पुरानी ढ़ीली खाँसी पर ।

कार्बोवेज 6— सामान्य सर्दी लगने से उत्पन्न खाँसी पर ।

ब्रायोनिया 30— गले में सुरसुराहट के साथ सूखी खाँसी का खाना खाने के बाद उठना तथा पीला-नीला, रक्त-मिश्रित कफ निकलना ।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

(1) एफेड्रीन $\frac{1}{3}$ ग्रेन, डार्टिनल $\frac{1}{6}$ ग्रेन, कोडीन फॉस $\frac{1}{2}$ ग्रेन, सिरप ग्लूकोज 1 ड्राम तथा एकुआ (सब मिलाकर) 1 औंस । यह सब 1 खुराक है । दिन में 3-4 बार देने से खाँसी दूर होती है ।

(2) बाइ कार्बोनेट ऑफ पोटास 40 ग्रेन, एण्टीमोनियम वाइन $1\frac{1}{2}$ ड्राम, इपिकाकुआना-वाइन 20 बूँद, सिरप ऑफ लेमन $2\frac{1}{2}$ ड्राम, एकुआ $2\frac{1}{2}$ औंस। सबको मिलालें ।

मात्रा 2 ड्राम । हर 3-4 घण्टे बाद दें । इससे कुकर-खाँसी में लाभ होता है ।

(3) एण्टी पाइरिन 1 ग्रेन, क्विनीन, हाइड्रो ब्रोमाइड 7 ग्रेन, टिंक्चर बेलाडोना 16 बूँद, सिरप टालू 3 ड्राम, एकुआ क्लोरोफार्म (सब मिलाकर) 4 औंस ।

यह 12 खुराकें हैं । दिन में 3 बार 1-1 खुराक दें । जब मरीज अच्छा होने लगे, तब शक्ति-वर्द्धक औषध भी दें । यह कुकर-खाँसी की दवा है। । यह रोग प्रायः 7 वर्ष की आयु के बच्चों को अधिक होता है ।

(4) खाँसी की पेटेण्ट औषधियों में पेप्स, कासाकोडीन, ग्लाइकोडिन टर्पवसाका, फेन्सिडिल, बिनैड्रिल ऐक्सपेक्टोरेण्ट आदि हैं ।

(5) कुकर-खाँसी की पेटेण्ट औषधियाँ निम्नलिखित हैं—

सिरप सायोजाइड, पर्टयूसाल आदि ।

ट्रिपल बेक्सीन, कुकर-खाँसी की प्रतिषेधक दवा है ।

(6) खाँसी में प्रयुक्त होने वाले इञ्जेक्शन निम्नलिखित हैं—

बेला फोलाइन—यह खाँसी में आने वाली वमन को रोकता है, तथा कुकर-खाँसी में भी लाभ करता है ।

डायोमोर्फीन हाइड्रोक्लोराइड—यह खाँसी, दमा ब्रॉकाइटिस तथा यक्ष्मा आदि में लाभकारी है ।

एसिड-फॉस—पुरानी खाँसी में हितकर हैं ।

रक्त-पित्त (Hemoptysis)

अधिक शोक, रञ्ज, परिश्रम तथा बहुमैथुन करने से एवं तीक्ष्ण, चटपटे, खट्टे, गरम आदि पदार्थों के सेवन से जला हुआ पित्त खून को जलाता है । तब वह मुँह, नाक, कान, नेत्र आदि शरीर के ऊपरी अथवा गुदा, योनि लिङ्ग आदि निम्न मार्गों से निकलने लगता है । विशेषकर मुँह से खून जाने को ही बोलचाल की भाषा में 'रक्त-पित्त' कहते हैं । ज्वर, रक्त-वमन, खाँसी, श्वास, कमजोरी, बेचैनी, भोजन के बाद जलन का अनुभव, दाह, मूर्च्छा, प्यास सिर-दर्द आदि इसके उपसर्ग है ।

निम्नलिखित योग रक्त-पित्त में लाभ पहुँचाते हैं-

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) अडूसे के पत्तों का रस, गूलर के फलों का रस तथा लाख का भिगोया हुआ पानी—इन्हें मिलाकर पीने से खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(2) एक या सवा मासे फिटकरी के महीन चूर्ण को दूध में मिलाकर पीने से खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(3) अडूसे के पत्तों के स्वरस में तालीस-पत्र का चूर्ण तथा शहद मिलाकर पीने से रक्त-पित्त में लाभ होता है ।

(4) हरड़ को अडूसे के पत्तों के रस में 7 दिन तक खरल करके शहद के साथ खाने से रक्त-पित्त नष्ट होता है ।

(5) दाख और प्रियंगु के फूल 1-1 तोला, बकरी का दूध 16 तोला तथा पानी 1 सेर—इन सबको मिलाकर औटायें । जब दूध शेष रह जाय, तब उसे छानकर रोगी को पिला दें । इससे रक्त-पित्त नष्ट होता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) पियाबाँसे (अडूसे) के पत्ते एक तोला को पानी में पीस छानकर शहद

मिलाकर पियें । इसे कुछ दिनों तक इस्तेमाल करते रहने पर वायु-नली अथवा फेफड़ों से खून आना बन्द हो जाता है ।

(2) कच्चे गूलर एक पाव लेकर $2\frac{1}{2}$ लीटर पानी में उबालें । जब वे गल जायँ और पानी छठा हिस्सा रह जाय, तब उतारकर गूलरों को मल लें तथा पानी को छान लें । इस पानी में आधा सेर चीनी मिलाकर शर्बत का कवाम बनायें । हर रोज 2-2 तोले इस शर्बत को चाटते रहें । इससे खून गिरना बन्द हो जायगा ।

(3) गेरू और सेलखड़ी एक-एक माशा लेकर महीन पीस लें तथा इस चूर्ण को किसी भी शर्बत में मिलाकर दिन में 2-3 बार चाटें । इससे शरीर के किसी भी अङ्ग से गिरना वाला खून बन्द हो जायगा ।

(4) कीकर की कोंपल, अनार के पत्ते और आँवला—ये सब 4-4 माशे तथा सूखा धनिया 2 माशे—इन सबको रात के समय पानी में भिगो दें । सुबह उसी पानी में सबको पीस छानकर, मिश्री से मीठा कर लें और पी लें । इस प्रयोग द्वारा किसी भी अङ्ग से आने वाला खून रुक जाता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

एकोनाइट 6x— पाकाशय में दर्द, कलेजे का धड़कना, ज्वर तथा घबराहट के लक्षणों में ।

इपिकाक 3x, 6— वमन के साथ चमकीला लाल रक्त निकलना, बार-बार खाँसी उठना, जीभ का तर होना आदि लक्षणों पर ।

हैमामेलिस 1x— बिना कष्ट के रक्तस्राव होना, हल्के काले रङ्ग का खून निकलना, पेट में गड़बड़ी आदि लक्षणों पर ।

आर्सेनिक 6x— साँस लेने में कष्ट, कलेजे का धड़कना, शरीर में दाह तीव्र प्यास आदि लक्षणों पर ।

इनके अतिरिक्त लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ भी लाभ करती हैं—

नक्सवोमिका 5, **फेरम** 6, **बेलाडोना** 6, **सिकेलि** 2x, **क्रोटन** 2x, **फास्फोरस** 6, **चायना** 3, 30, **आर्निका माण्टेना** 3x, 30, **तथा मिल्लिफोलियम वि.** 1x.

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) इस रोग में निम्नलिखित इञ्जेक्शन लाभ करते हैं-

कोगोरेड, कैल्शियम क्लोराइड, कैल्मीनोल, मार्फिया एट्रोपिन, कैल्शियम ग्लूकोनेट, पिट्रयूट्रीन, एर्गोटीन, साइट्रेट तथा इमैटोन हाइड्रोक्लोराइड ।

(2) स्ट्रेप्टोमाइसिन के इञ्जेक्शन भी आवश्यकतानुसार दिये जाते हैं ।

(3) एलोपैथी में इस रोग की चिकित्सा प्रायः क्षय-रोग के समान ही की जाती है ।

मन्दाग्नि, कब्ज, अफारा
(Constipation, Anorexia Dyspepsia. etc)

खान-पान में खराबी, अधिक जागरण आदि अनेक कारणों से पेट की अग्नि मन्द पड़ जाती है, जिसके कारण भूख अधिक लगती है फिर कब्ज (कोष्ठ बद्धता), अरुचि, अजीर्ण, अफारा, भूख अधिक लगना, भस्मक रोग) पेट में भारीपन, जी मिचलाना, खट्टी-मीठी डकारें आना आदि अनेक प्रकार के विकार प्रकट होते हैं । यहाँ मन्दाग्नि तथा उसे सम्बन्धित अन्य विकारों की सामान्य चिकित्सा सम्बन्धी सरल योगों को प्रस्तुत किया जा रहा है ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) चिरचिटा (अपामार्ग) के बीजों को दूध में डालकर खीर पकायें । इस खीर को खाने से भस्मक-रोग (अत्यधिक भूख लगना) दूर होता है ।

(2) गूलर की छाल को स्त्री के दूध में घिसकर पीने से भस्मक-रोग नष्ट होता है ।

(3) हरड़, पीपल और सोंठ- तीनों को समभाग लेकर चूर्ण करलें । इसे 3-3 माशे की मात्रा में नित्य दो-तीन बार सेवन करते रहने से अग्नि प्रदीप्त होती है, प्यास दूर होती है तथा मन्दाग्नि (बदहज्मी) नष्ट हो जाती है ।

(4) लौंग, सोंठ, कालीमिर्च और भुना हुआ सुहागा—इन सबको समभाग लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बनालें । फिर खरल चिरचिटे अथवा चीते की छाल का रस डालते हुए घोटें तथा अन्त में चने के बराबर की गोलियाँ बना लें । दो-तीन बार 2-2 गोली पानी के साथ सेवन करते रहने से मन्दाग्नि और अजीर्ण-रोग दूर होते हैं ।

(5) अजवायन 4 तोला और सेंधा नमक एक तोला दोनों को कूट-पीसकर रख लें । प्रतिदिन प्रातः-सायं 2 माशे चूर्ण फाँककर ऊपर से थोड़ा-सा सिरका पी लिया करें । इससे मन्दाग्नि तथा बादी के विकार शीघ्र दूर हो जाते हैं ।

(6) पकी हुई मीठी इमली के पने में सेंधा नमक, कालीमिर्च तथा हींग डालकर पीने से मन्दाग्नि तथा अरुचि की शिकायत दूर हो जाती है ।

(7) तारपीन का तेल 6 माशा तथा अरण्डी का तेल 1 तोला दोनों को मिलाकर पेट पर मलें । ऊपर से अरण्डी के पत्ते को गरम करके बाँध दें । इससे पेट का अफारा दूर हो जाता है ।

(8) 1 तोला सनाय और 6 माशे सौंफ—इन्हें पानी में उबाल कर छान लें । फिर उसमें थोड़ी-सी खाँड मिलाकर पियें । इससे दस्त साफ ऊपर कब्ज दूर हो जायगा ।

(9) पीली हरड़ के छिलके को पीसकर छान लें, फिर उसमें थोड़ा-सा पिसा हुआ लाहौरी नमक मिलाकर 6 माशे की मात्रा में फाँककर ऊपर से गुनगुना पानी पी लें । इससे कब्ज दूर हो जायगा ।

(10) असमलतास की गिरी 4 तोला को रात के समय पानी में भिगो दें । सुबह उसे मलकर छान लें । फिर उसमें दो तोला चीनी मिलाकर पियें। इससे कब्ज दूर होगा ।

(11) असली गुलाब के फूलों का गुलकन्द 4 तोला रात के समय खाकर, ऊपर से दूध पीकर सो जायें । प्रातःकाल एक-दो दस्त साफ आयेंगे और कब्ज दूर हो जायेगा ।

(12) अदरक का रस 1 तोला को थोड़े-से शहद में मिलाकर पीने से अपच के कारण आने वाली डकारों आदि की शिकायत दूर हो जाती है ।

(13) पीपल और सौंठ के चूर्ण में गुड़ मिलाकर सेवन करने से अजीर्ण, आम-शूल तथा सूजन आदि विकार दूर होते हैं ।

(14) नीबू के रस में जायफल घिसकर पिलाने से दस्त साफ होकर, अजीर्ण अफरा तथा पेट का शूल आदि रोग नष्ट होते हैं ।

(15) हरड़, बहेड़ा, आँवला, सोंठ, कालीमिर्च और पीपल—इन्हें 1-1 तोला लेकर कूट-पीसकर छान लें । इनके 3 माशे चूर्ण को प्रातः-सायं फाँककर ऊपर से ताजा पानी पी लेने से 6 दिन के भीतर ही अजीर्ण नष्ट हो जाता है।

(16) सोंठ, कालीमिर्च और पीपल—तीनों को समभाग लेकर कूट-पीसकर छान लें । 2-2 माशे की मात्रा में इस चूर्ण का सेवन करते रहने से अजीर्ण दूर होता है, भोजन पचता है तथा वायु शान्त होती है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) अजवाइन 5 तोला को नीबू के रस में भिगोकर सुखा लें । फिर उसे थोड़े-से काले नमक के साथ पीस-छानकर रख लें । इस चूर्ण को 3-3 माशे

की मात्रा में सुबह-शाम ताजा पानी के साथ लें । इससे खाना जल्द हज्म होगा, बदहज्मी दूर होगी, हवा खारिज होगी तथा पेट का दर्द दूर होगा ।

(2) पाँच तोला कलौंजी को रातभर सिरके में भिगोकर रख दें । दूसरे दिन उसे छाया में सुखाकर सफूफ (चूर्ण) बनायें और 15 तोला असली शहद में मिलाकर रख लें । इस माजून को रोज सुबह-शाम 6-6 माशे चाटते रहें । इससे भूख लगेगी तथा हवा भी खारिज हो जाती है ।

(3) अदरक का रस 1 तोला थोड़े-से शहद में मिलाकर चाटने के कुपच के कारण आने वाली बुरी डकारें दूर हो जाती हैं ।

(4) अजवाइन 1 तोला, सोंठ 6 माशा तथा काला नमक 6 माशा इन तीनों को महीन पीसकर, 3-3 माशे को मात्रा में गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से पेट का दर्द दूर हो जाता है ।

(5) आक (मदार) के बिना खिले फूल 5 तोला, सोंठ 3 तोला तथा काला नमक 1 तोला को महीन पीस-छानकर नीबू के रस में गूँथकर जंगली बेर के बराबर की गोलियाँ बनाकर रख लें जरूरत के समय 1 गोली गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से अपच तथा पेट के दर्द में लाभ होता है ।

(6) एक तोला अदरख के रस में थोड़ा-सा नमक डालकर पीने से अफरा दूर होता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

पेट सम्बन्धी विभिन्न विकारों में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ देनी चाहिए । मात्रा आवश्यकतानुसार निश्चित कर लें ।

नक्सवोमिका 30, 200— एक बार में पाखाना साफ न हो, दो-तीन बार मल-विसर्जन की इच्छा हो तो इसे रात को सोते समय लें । कलेजे में जलन, मुँह का स्वाद खट्टा होना, पेट में मरोड़, ऐंठन, दस्त न होना आदि लक्षणों में भी हितकर है ।

ब्रायोनिया 6, 30— मल खुश्क हो जाना तथा तीव्र प्यास के लक्षणों में ।

ओपियम 30— कई-कई दिनों तक दस्त न होने पर भी कष्ट का अनुभव न होना तथा आँतों का काम बन्द कर देना ।

प्लम्बम 6— पुराने कब्ज में ।

एल्युमिना 30— आँतों की बेहद खुश्की में ।

कैल्केरिया-कार्ब 6— खट्टी वमन में ।

सल्फर 30— खट्टी डकार, कब्ज, पाकाशय में भारीपन आदि विकारों में ।

कार्बोवेज 30— यह अजीर्ण-रोग की श्रेष्ठ औषध है । खट्टी डकार वायु-सञ्चय, पेट फूलना आदि सभी विकारों को दूर करती है ।

लायकोपोडियम 30- अफारा, अजीर्ण तथा अधोवायु न निकलना आदि लक्षणों में ।

पल्सेटिला 6— प्यास का अभाव, जीभ सूखना तथा पतले दस्तों में ।

कोलोसिन्थ 2x, 30— पेट में मरोड़, ऐंठन, शूल जैसा दर्द, दबाने से दर्द कम होना आदि लक्षणों में ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) पिल कोलोसिन्थ 60 ग्रेन, एक्सट्रैक्ट हायोसियामस 8 ग्रेन, एक्सट्रैक्ट बेलाडोना 4 ग्रेन, पोडोफाइलम $2\frac{1}{2}$ ग्रेन ।

इन सबको मिलाकर 16 गोली बनालें । भोजन के बाद 2 गोली दें । यह कब्ज में हितकर है ।

(2) कब्ज के लिए निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं—

परगोलैक्स, कैस्टीफीन, ग्लैक्सोन, टैक्सीन, हर्बोलैक्स, ट्रिफोलेक्सिन ग्लैक्सोना तथा कैस्टोबेस्ट ।

(3) एसकार्बिक एसिड 100 मि. ग्रा. एलिक्जिर विटामिन बी. 100 मि. ग्रा. कम्पलैक्स विद फोलिक एसिड 1 ग्राम, सिरप जिंजर 1 ड्राम तथा एकुआ एनेसी (कुल मिलाकर) 1 औंस ।

इसे भोजन के बाद दिन में 3 बार दें । यह मिक्चर अजीर्ण में उपयोगी है ।

(4) अजीर्ण में निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ हितकर हैं-

डीजीप्लेक्स, पिटाडायस्टेज, पैक्रिजायम, कम्बिडायस, डायर्जेज्जायम आदि ।

(5) मन्दाग्नि तथा अजीर्ण में 'एन्यूरीना' का इञ्जेक्शन लाभ करता है । यह इञ्जेक्शन पाचन-क्रिया के दोष, रक्ताल्पता, थकान, मस्तिष्क-दोष आदि में भी हितकर है ।

उदर-शूल का पेट या दर्द (Colic Pain)

यह रोग प्रायः अजीर्ण के कारण उत्पन्न होता है । इसमें पेट में शूल गढ़ने जैसी वेदना होती है । अम्लपित्त रोग में भी पेट-दर्द होता है, जिसे 'अम्लशूल' कहते हैं । पित्त के सूखकर कठोर हो जाने पर जो पेट में तीव्र शूल होता है, उसे 'पित्त-शूल' कहते हैं । इसके रोग में पेट में तीव्र वेतना के साथ ही पित्त-वमन अथवा मिचली के लक्षण भी प्रकट होते हैं । पेट में कीड़ों के कारण भी शूल होता है । भोजन के बाद नियमित रूप से जो शूल होता है, उसे 'परिणाम-शूल' कहते हैं । अतः शूल-रोग के यथार्थ कारण को जानकर ही उसकी चिकित्सा करनी चाहिए । मूल कारण को नष्ट कर देने से शूल रोग स्वतः दूर हो जाता है । शूल-रोग की तात्कालिक-शान्ति के लिए निम्नलिखित औषधियाँ हितकर हैं ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) शंख, काला नमक, भुनी हुई हींग, सोंठ, कालीमिर्च तथा पीपल-इन सब वस्तुओं को समभाग लेकर चूर्ण करें । 3 माशा चूर्ण को गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से पेट के दर्द में लाभ होता है । अजीर्णजन्य शूल में यह विशेष हितकर है ।

(2) हरड़, बहेड़ा, आँवला और राई—इन्हें समभाग लेकर चूर्ण करें । 6 माशा चूर्ण को गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से लाभ होता है । यह कब्ज में विशेष हितकर है ।

(3) असली जवाखार को $1\frac{1}{2}$ माशा की मात्रा में गरम पानी के साथ हर घण्टे बाद देने से वृक्क-शूल अर्थात् गुर्दे के दर्द में शीघ्र लाभ होता है ।

(4) पिपरमेण्ट का फूल आधी रत्ती अथवा 1 रत्ती की मात्रा में पानी अथवा बताशे में डालकर खाने से पेट का दर्द दूर हो जाता है ।

(5) कागजी नीबू का रस 1 तोला, शहद 3 माशा तथा जवाखार 3 माशा—इन सबको मिलाकर पीने से हर प्रकार का भयङ्कर पेट-दर्द भी दूर हो जाता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) अजवायन 5 तोला और नौसादर 2 तोला को महीन पीसकर छानकर रख लें । जरूरत के वक्त 2-2 माशे चूर्ण को गुनगुने पानी के साथ पिलाने से पेट का दर्द दूर होता है ।

(2) अजवायन 1 तोला, सोंठ 6 माशा तथा काला नमक 3 माशा इन तीनों को महीन पीसकर 3-3 माशे की मात्रा में गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से पेट का दर्द दूर होता है ।

(3) आक के बिना खिले फूल 5 तोला, सोंठ 3 तोला तथा काला नमक 1 तोला महीन पीस-छानकर कागजी नीबू के रस में गूँथकर झार-बेरी के बराबर गोलियाँ बनाकर रखलें । आवश्यकता के समय 1 गोली गुनगुने पानी के साथ दें । इससे पेट-दर्द तथा अपच की शिकायत दूर हो जायेगी ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

नक्सवोमिका 6,30— यदि कब्ज के साथ पेट दर्द हो ।

कोलोसिन्थ 6, 30— यदि नाभि के चारों ओर तीव्र वेदना हो ।

लाइकोपोडियम 30— अफरा, अजीर्ण, अधोवायु न निकलना आदि शिकायतों के साथ होने वाले पेट दर्द में ।

कैमोमिला 12, 30— आमाशय, पेट और नाभि के समीप भयानक कटन के साथ दर्द, मुँह से लार अधिक आना, कमर में टूट जाने जैसा दर्द आदि लक्षणों में ।

चायना 30— दुर्बल शरीर वाले लोगों के पेट का दर्द, जिसमें अफरा भी अधिक हो, अपान-वायु न खुलना तथा आँथों में खिंचाव आदि लक्षणों में ।

सल्फर 12, 30— नाभि-शूल, नाभि के समीप तनाव, अफरा, पेट में गड़गड़ाहट, हवा न खुलना आदि पर ।

एकोन 12, 30— पेट में सख्त दर्द, ऐंठन, आँतों में गड़गड़ाबट, गर्मी का अनुभव, कमर के निचले भाग में दर्द, पेट का स्पर्श करना भी सहन न हो ।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

(1) स्प्रिट एमोनिया एरोमेटिक आधा औंस, टिंक्चर सिनकोना कम्पाउण्ड आधा औंस तथा टिंक्चर केप्सिकम 1 ड्राम—इन सबको मिला लें । मात्रा 5 से 265 बूँद तक पानी के साथ लें । यह पेट के दर्द को दूर करता है ।

(2) सोडा वाई कार्ब 20 ग्रेन टिंक्चर कार्ड को 20 बूँद. नीबू का रस 20 बूँद तथा पानी 4 औंस ।

नीबू के रस के अतिरिक्त तीनों वस्तुओं को पहले गिलास में डालें । ऊपर से नीबू का रस निचोड़ कर तुरन्त रोगी को पिला दें । एक खुराक से लाभ न

होने पर, थोड़ी देर बाद ही दूसरी खुराक दें । इससे हर प्रकार का दर्द 15 मिनट में ही ठीक हो जाता है तथा रोगी को नींद आने लगती है ।

(3) निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ उदर-शूल में लाभ करती हैं-

बैलेडेनल, स्पाज्मोसिवालजीन, स्पाज्मण्डाल आदि ।

(4) निम्नलिखित इञ्जेक्शन उदर-शूल में हितकर हैं—

मार्फिया, मार्फिन, एट्रोपिन, डायोडिन, कोडीन, स्पाज्मिण्डान, मोर्फिन हाइपोफास्फेट, मोर्फिन हाइड्रोक्लोराइड, मोर्फिन हाकेसिन, हाइड्रोब्रोमाइड, अर्गोटिन आदि ।

वमन या उल्टी (Vommiting)

अधिक भोजन, अजीर्ण, यकृत्-विकार, अम्लपित्त, सवारी गाड़ी में यात्रा आदि अनेक कारणों से वमन होती है । यह सूखी उबकाई, पानी पित्त अथवा अन्न की उल्टी, हैजे की उल्टी आदि कई प्रकार की होती है, अतः इसमें लक्षणानुसार औषध देनी चाहिए । इसमें निम्नलिखित औषधियाँ लाभ करती हैं ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) अर्क-कपूर को चीनी में डालकर देने पर हर प्रकार के वमन में लाभ होता है ।

(2) जायफल को पानी में घिसकर चाटने से वमन होना बन्द हो जाता है ।

(3) सौंफ, पोदीना और बड़ी इलायची—इन तीनों को 1-1 तोला लेकर काढ़ा बनावें और उसमें 2 तोला मिश्री डालकर पियें तो वमन में लाभ होगा।

(4) बर्फ के टुकड़ों को मुँह में रखकर चूसने से वमन होना रुक जाता है ।

(5) आधा पाव पानी में एक तोला शहद घोलकर पीने से वमन होना बन्द हो जाता है ।

(6) दूब की जड़ का रस निकाल कर उसमें 2 माशे छोटी इलायची का चूर्ण मिलाकर चाटने से पित्त, पानी अथवा अन्न की वमन रुक जाती है ।

(7) नीबू को बीच में काटकर बीज निकाल दें, फिर उसमें सेंधा नमक तथा कालीमिर्च पीसकर भर दें तथा आग पर थोड़ा-सा गरम करके चूसें । इससे पित्त, पानी अथवा अन्न की उल्टी आना बन्द हो जायगा ।

(8) प्याज का रस, पोदीने का रस, मूली का रस तथा अदरक का रस इन सबको 1-1 तोला मिलाकर पिलाने से हैजे की वमन रुक जाती है ।

(9) गाय के मूत्र में सेंधा नमक मिलाकर पिलाने से भी हैजे की वमन में लाभ होता है ।

(10) लौंग के चूर्ण को चालीस गुने पानी में औटायें । जब तीन-चौथाई पानी शेष रह जाय, तब उतार लें । हैजे के रोगी को प्यास लगने पर यह पानी पिलायें । इससे वमन रुक जायगी तथा प्यास शान्त होगी ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) दो-तीन तोला बजनी गेरू के टुकड़े को गरम करके पानी में बुझायें। इसी तरह दो-तीन बार करें, फिर वह पानी रोगी को पिला दें । किसी भी कारण से आने वाली उल्टी (कै) इसके प्रयोग से बन्द हो जायगी ।

(2) राई 6 माशा को पानी में पीसकर आमाशय के ऊपर लेप कर दें तथा 10 मिनट बाद ही हटा दें । इससे उल्टी तथा उबकाई आना बन्द हो जायगा ।

(3) एक पाव सिरके में आधा सेर शक्कर मिलाकर शर्बत बनालें । इस शर्बत को चाटने से पित्त के कारण आने वाली उबकाई बन्द हो जायगी ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

नक्सवोमिका 3, 6— पित्त की अथवा खट्टी वमन होने पर ।

इपिकाक 6, 30— खाई वस्तु की वमन एवं बार-बार जी मचलाने के लक्षणों में ।

एण्टिम क्रूड 6, 30— वमन तथा जीभ का एकदम सफेद हो जाना आदि लक्षणों में ।

फास्फोरस 6— ठण्डा पानी पेट में पहुँचते ही गरम होकर वमन हो जाने के लक्षणों में ।

आर्सेनिक 6— प्यास, कमजोरी, घबराहट तथा पेट में जलन के लक्षणों सहति वमन होने पर ।

क्युप्रममेट 6x, 30— शूल का दर्द, अधिक हिचकी तथा मल की वमन होने पर ।

प्लम्बम 3, 6, 30— नाभि-स्थल में शूल जैसा दर्द तथा मल का गुदा से न निकलकर, मुख-मार्ग से निकलना और वमन में मल की गन्ध का रहना।

ऐसिड-कार्बोलिक 6, 30— नवीन मन्दाग्नि के कारण वमन तथा मिचली में हितकर है ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) अर्क-कपूर (स्प्रिट कैम्फर) की 2-3 बूँद पानी में डालकर पिला देने से उल्टी आना रुक जाता है ।

(2) सेप्टोन नामक इञ्जेक्शन के प्रयोग से उल्टी आना रुक जाता है । यह ज्वर, दमा और श्वास-रोग में भी हितकर है ।

(3) देशी कपूर 1 तोला, डाइल्यूट अल्कोहल 1 ड्राम—दोनों को मिलाकर 5 से 7 बूँद की मात्रा में देने से वमन आना रुक जाता है । यह हैजा की वमन में भी लाभकारी है ।

(4) लेमनजूस 5 ड्राम, प्याज का रस 5 ड्राम, ऑयल मेन्था पिपरेटा 5 ड्राम, कैम्फर स्प्रिट 2 ड्राम तथा टिंक्चर ओपियम 10 बूँद सबको मिलाकर रख लें ।

मात्रा— 2 से 5 बूँद तक । इस औषध की एक ही खुराक से वमन (उल्टी) आना बन्द हो जाता है । यह हैजा, अतिसार, शूल तथा संग्रहणी में भी हितकर है ।

विशूचिका या हैज़ा (Cholera)

विशूचिका अर्थात् हैजा बड़ी भयङ्कर एवं संक्रामक बीमारी है । यह रोग बड़ी तेजी से आक्रमण करता है तथा क्रमशः बढ़ता चला जाता है । इसकी (1) आक्रमण, (2) बर्द्धमान और (3) पतन—ये तीन मुख्य अवस्थायें मानी जाती हैं । इस रोग की कोई अवधि नहीं हैं । 1 से 72 घण्टे तक इसका प्रकोप रहता देखा गया है । इसी अवधि में उचित उपचार हो जाने पर रोगी या तो बच जाता है अन्यथा प्राणों से हाथ धो बैठता है ।

अनियमित भोजन, गन्दा पानी, गन्दी हवा, अपच, गर्मी आदि कारण यह रोग होता है । कभी-कभी यह महामारी के रूप में भी फैलता है । उस स्थिति में स्वस्थ व्यक्ति भी इसकी चपेट में आ जाते हैं । गर्मी के दिनों में तथा भीड़-भाड़ वाली गन्दी जगहों में इसका प्रकोप अधिक होता है ।

इस रोग की प्रथमावस्था में शरीर शिथिल तथा चेहरा विवर्ण हो जाता है, सिर घूमता है, घबराहट बढ़ जाती है तथा रोगी को थोड़ा मल मिले पतले दस्त एवं वमन होने लगते हैं, शरीर कमजोर होता चला जाता है । दूसरी

अवस्था में केवल पानी जैसे दस्त होते हैं, वमन तथा दस्तों की संख्या बढ़ जाती है, पेट में काँटा चुभने जैसी पीड़ा होती है, शिथिलता बढ़ जाती है, आँखें गढ्ढे में धसने लगती है । कभी-कभी पेशाब बन्द हो जाता है । तीसरी अवस्था में रोगी मुर्दे जैसा हो जाता है, उसे श्वास लेने में कष्ट भी होता है, तकलीफ के कारण चीखता है तथा ठण्डे पानी एवं ठण्डी हवा की इच्छा करता है, शरीर पूर्णतः शिथिल हो जाता है, अन्तिम अवस्था में वमन और दस्त बन्द भी हो जाते हैं परन्तु शरीर का तापमान घटता चला जाता है । स्मरण-शक्ति एवं ज्ञान नष्ट न होने पर भी वह बातचीत करने में असमर्थ हो जाता है, पेशाब एकदम रुक जाता है ।

हैजे के लक्षण दिखाई देते ही किसी सुयोग्य चिकित्सक से तुरन्त इलाज कराना चाहिए । यह छूत की बीमारी है, अतः यह भी ध्यान रखना चाहिए कि अन्य लोगों पर उसका असर न हो । रोगी की वमन अथवा दस्त को तुरन्त ही राख-मिट्टी आदि से ढँक देना चाहिए, ताकि उस पर मक्खियाँ न बैठें, अन्यथा वे बीमारी के कीटाणु एक से दूसरी जगह पर न जायँगी । रोगी की परिचर्य्या में लगे व्यक्तियों को भी अपने बचाव का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

जहाँ चिकित्सक तुरन्त उपलब्ध न हों, वहाँ चिकित्सक के आने तक निम्नलिखित सामान्य उपचारों तथा औषधियों का उपयोग करना चाहिए । इसके व्यवहार से रोगी को मौत के मुँह में जाने से बचाया जा सकता है । इस रोग में रोगी को पानी पीने के लिये नहीं देना चाहिए । परन्तु यदि पानी के बिना रोगी के प्राण जाने की आशंका हो तथा रोगी पानी के बिना अत्यधिक घबड़ा रहा हो तो उसे एक-एक चम्मच पानी पिलाना चाहिए । पिलाया जाने वाला पानी उबला हुआ होना आवश्यक है । उबलने पर एक सेर का एक छटाँक भर शेष रहा पानी पिलाना ठीक बताया गया है ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) चिरचिटा (अपामार्ग) की जड़ को पानी में पीसकर पिलाने से शूल सहित हैजा में लाभ होता है ।

(2) बेल का गूदा, सोंठ और जायफल—इन तीनों वस्तुओं को काढ़ा पिलाने से हैजा ठीक हो जाता है ।

(3) मदार की छड़ की छाल 2 तोला, अदरक का स्वरस 2 तोला को खरल में घोंटकर 1-1 रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया में सुखाकर रख लें । आवश्यकता के समय रोगी को इन्हें एक, दो या तीन-तीन घन्टे के बाद एक

घूँट पानी से निगलवाते रहें । रोग की न्यूनाधिकता के आधार पर इन्हें जल्दी-जल्दी या देर से देना चाहिए । इन गोलियों के सेवन से हैजा में अवश्य लाभ होता है ।

(4) कपूर 1 रत्ती तथा सोंठ का चूर्ण 3 माशा—इन दोनों को इकट्ठा 10-15 मिनट तक खरल करें । इस दवा की 8 मात्राऐं बनायें 15-15 या 20-20 मिनट बाद एक-एक खुराक पिलाते रहें । इससे हैजा में तुरन्त लाभ होता है । वमन और दस्त बन्द हो जाने पर इसे नहीं देना चाहिए ।

(5) अफीम 1 रत्ती, कालीमिर्च 2 रत्ती हींग 2 रत्ती यथा सोंठ 2 रत्ती—इन सबको पीसकर मूँग के बराबर की गोलियाँ बना लें । दिनभर में आवश्यकतानुसार 1 से 5 गोली तक सेवन कराने से हैजा ठीक हो जाता है।

(6) एक तोला अरहर के पत्तों को एक छटाँक पानी में पीसकर कपड़े में छान लें । इस स्वरस को घण्टे-घण्टे भर बाद पिलाते रहने से हैजा ठीक हो जाता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) दरियाई-नारियल एक जौ के बराबर, अर्क-गुलाब में घोटकर चाटने से दस्त और कै (वमन) शर्तिया बन्द हो जाते हैं ।

(2) इलायची के बीज, कासनी और धनियाँ 4-4 माशे तथा गुलकन्द 1 तोला—इन सबको घोंट छानकर पिलाने से गरमी के हैजा में लाभ होता है।

(3) हैजा के रोगी को कै और दस्त अधिक हों तथा आधा रत्ती अफीम को एक रत्ती चूना (पान में लगाये जाने वाले) में मिलाकर खिला दें । इसे दस्त तुरन्त बन्द हो जायेंगे तथा रोगी को नींद आ जायेगी ।

(4) बेलगिरी, सोंठ और जायफल का काढ़ा पिलाने से हैजे में लाभ होता है ।

हैजे की प्यास वमन और मूत्रावरोध

(1) पानी में थोड़ी-सी लौंग अथवा जायफल डालकर औटायें । जब आधा पानी जल जाय, तब उतारकर छानकर ठण्डा कर लें । वह पानी हैजे के रोगी को प्यास लगने पर थोड़ा-थोड़ा पिलाने से प्यास कम हो जाती है तथा जी मचलाना, हृदय की पीढ़ा, सूखी उबकाई आना आदि लक्षण दूर होते हैं ।

(2) पानी के बर्फ के टुकड़े को चुसाने से प्यास कम हो जाती है ।

(3) राई और कपूर को पानी के साथ पीसकर गरम करके रोगी की छाती पर लेप कर देने से वमन (उल्टी) बन्द हो जाती है ।

(4) गोमूत्र अथवा काँजी को आग पर गरम करके उसमें फलालेन का टुकड़ा भिगोकर निचोड़ लें तथा उससे रोगी के पेट पर धीरे-धीरे सेकें । इसे पेट का दर्द शान्त हो जायगा ।

(5) मोरपंख के चँदोबे को जलाकर राख कर लें । उस 2 माशे राख में थोड़ा-सा शहद तथा पीपल का चूर्ण मिलाकर रोगी को चटाने से वमन (उल्टी) बन्द हो जाती हैं । इससे हिचकी आना भी दूर हो जाता है ।

(6) राई को पानी में गाढ़ा पीसकर एक चौकोर पतले कागज पर लगाकर, कागज को पेट पर चिपका दें । जब जलन होने लगे, तब राई के कागज को मय राई के हटा दें । इससे वमन होना बन्द हो जायगा । तब कोई औषध काम न करे तथा दवा पेट में न ठहरे और वमन होना जारी ही रहे, तब इस उपाय का प्रयोग करने में सफलता मिलती है । इस पलस्तर को न्यूनतम 20 मिनट तक रखना चाहिए । इस पलस्तर को पेट की बजाय पीठ की रीढ़ की हड्डी पर लगाने से भी जलन बन्द हो जाती है तथा कमर पर रखने से बन्द पेशाब खुल जाता है ।

(7) टेसू के फूल और कमली-शोरा—इन दोनों को दो-दो तोले लेकर, सिल पर रखकर पानी के साथ पीसकर लुगदी-सी बनालें । उस लुगदी को रोगी के पेट पर रक्खें । यदि आधा घण्टे के भीतर पेशाब न हो तो इसी लेप को दुबारा लगायें । इससे पेशाब अवश्य खुल जाता है ।

(8) चूहे की मैंगनी में थोड़ा-सा कलमीशोरा मिलाकर पानी के साथ पीस, लुगदी सी बनालें । उसे रोगी की नाभि ने नीचे पेडू पर गाढ़ा-गाढ़ा लेप कर दें । इस प्रयोग से पेशाब अवश्यक खुल जाता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

कैम्फर—रोगी के आरम्भ होते ही 5, 10 अथवा 15 मिनट के अन्तर से 1-1 मात्रा 'रुबिनीका कैम्फर' थोड़ी-सी चीनी अथवा बतासे को साथ देना आरम्भ करें । बच्चों को 1 से 3 बूँद तक तथा वयस्कों की 5 से 15 बूँद तक रोग की तीव्रता के अनुसार दें । दो घण्टे की अवधि में यह औषध 10 से 12 बार देने पर भी यदि लाभ दिखाई न दे तो लक्षणानुसार अन्य औषधियाँ देनी चाहिए । सामान्यतः यह हैजे की सर्वश्रेष्ठ दवा है ।

क्युप्रम ऐसेट 3x— अधिक खिंचाव या ऐंठन, हाथ-पाँव की उगलियों के सामने की ओर टेढ़ी दिखाई देने पर इसे दें ।

विरेट्रम ऐल्ब 6— हरे रङ्ग के पानी जैसे दस्त, वमन, पेट में दर्द, सिर

में ठण्डा पसीना, शरीर का ठण्डा हो जाना या नील पड़ जाना एवं उङ्गलियों में ऐंठन आदि लक्षणों के साथ प्रकट होने पर इसे देना चाहिए ।

रिसिनम 3— बिना दर्द के चावल के धोवन जैसे पतले दस्त, बारम्बार वमन होना, दस्तों पर छोटे-छोटे चकत्ते से तैरते हुए दिखाई दें, साथ ही ऐंठन तथा गहरी सुस्ती के लक्षणों में इसे दें ।

क्रोटनटिग 3— जोर के साथ पिचकारी जैसे पानी की भाँति पतले दस्त, पानी पीने के बाद वमन एवं दस्तों का बढ़ना आदि लक्षणों पर ।

सोरिनम 30, 200— यह बच्चों के हर प्रकार के हैजे में उपयोगी है ।

ओपियम 30— दस्त तथा पेशाब बन्द होकर पेट फूल जाने, श्वास लेने में कष्ट तथा मृत्यु के लक्षण दिखाई देने पर ।

कार्बोविज 30— हैजे की हिमाङ्ग अवस्था में यह बहुत उपयोगी है । इससे शरीर की लुप्त हुई गर्मी पुनः लौट आती है ।

कैन्थरिस 30— पेशाब बन्द हो जाने पर इसके प्रयोग से पेशाब शीघ्र आ जाता है ।

कोब्रा 2 **वि०**—मृतक की भाँति चेहरे का रङ्ग बिगड़ जाना, शरीर का बर्फ की भाँति ठण्डा हो जाना, नाड़ी नायब हो जाना आदि अन्त समय के लक्षणों में ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) कैम्फर 1 औंस, ऑयल मेन्था पिपरेटा 1 औंस, थाइमोल आधा औंस तथा रेक्टीफाइड 7 औंस । सबको मिलालें ।

मात्रा— 5 से 15 बूँद तक । यह हैजे की प्रारम्भिक अवस्था, पेट की अकड़न, पेट का दर्द, नयी पेचिस, दस्त, अन्न का न पचना आदि में भी लाभ करता है ।

(2) थैलाजॉल 2 टेबलेट तथा केओलीन 40 ग्रेन । यह दोनों मिलाकर एक खुराक है । इसे प्रत्येक उल्टी अथवा दस्त के बाद देते रहें ।

(3) क्लोरोरेम्फेनिकल 125 मि. ग्राम तथा स्ट्रैप्टोमाइसिन 150 मि. ग्राम। दोनों को मिलाकर 1 मात्रा बनायें ।

हर 15 से 30 मिनट बाद थोड़े से पानी में घोलकर देते रहें । पहले 4 घण्टों में 10 मात्राएँ दी जा सकती हैं । फिर हम 1 या 2 घण्टे बाद 1-1 मात्रा देते रहें ।

(4) डाइल्यूट सल्फ्यूरिक एसिड 20 बूँद, टिंक्चर कार्डिमोसम कम्पाउण्ड 20 बूँद, स्प्रिट अमोनिया एरोमेटिक 20 बूँद, स्प्रिट क्लोरोफार्म 20 बूँद तथा कैम्पर वाटर 1 औंस । इन सबको मिलाकर 1 मात्रा बना लें । ऐसी 1-1 मात्रा हर तीन घण्टे बाद या हर वमन एवं दस्त के बाद देते रहें । यह हैजे की दूसरी अवस्था में लाभकर है ।

(5) एरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया 2 ड्राम, सल्फ्यूरिक ईथर 2 ड्राम, क्लोरिक ईथर 2 ड्राम, वाइनम गेलोसाइ ब्राण्डी 6 ड्राम तथा पिरमेण्ट वाटर 6 औंस—सबको मिलाकर रख लें । इसकी 4-4 ड्राम की मात्रा हर घण्टे बाद देते रहें । यदि इतनी मात्रा न पचे तो कम कर दें । आवश्यकतानुसार हर आधा घण्टे बाद भी दे सकते हैं । यह हैजे की तीसरी अवस्था में उपयोगी है ।

(6) निम्नलिखित इञ्जेक्शन हैजे में लाभ करते हैं-

बेलाफोलीन, पिट्यूट्रीन (पी. डी.) नार्मल सैलाइन, इन्फ्यूजन आदि ।

अतिसार या दस्त (Diarrhoea)

पतले दस्तों को अतिसार कहा जाता है । समय-विरुद्ध, संयोग-विरुद्ध तथा भार, चिकने, रुके एवं प्रकृति-विरुद्ध, खान-पान आदि कारणों से यह बीमारी होती है । इसमें पानी के समान पतले दस्त-बार-बार होते हैं । वात-पित, कफ आदि के भेद से उनका रङ्ग-रूप कई प्रकार का होता है । अतिसार को सामान्य-चिकित्सा में निम्नलिखित औषधियाँ लाभ करती हैं—

(1) बबूल के पत्तों का रस पीने से हर प्रकार के कठिन तथा भयानक दस्त ठीक हो जाते हैं ।

(2) प्याज को कूटकर रस निकाल लें, फिर उसमें थोड़ी-सी अफीम मिलाकर सेवन करने से अतिसार में अवश्य लाभ होता है ।

(3) आम की पुरानी गुठली की मींगी तथा भुनी हुई सौंफ—इन दोनों को समभाग लेकर कूट-छानकर चूर्ण बनालें । इस चूर्ण को 6-6 माशे की मात्रा में प्रातः सायं पानी के साथ सेवन करने से हर प्रकार के दस्त बन्द हो जाते हैं ।

(4) अजमोद, मोचरस, सोंठ और धाय के फूल—इन चारों को समभाग लेकर कूट-पीसकर कपड़छन करलें । 6-6 माशे चूर्ण प्रातः-सायं गाय के मट्ठे के साथ लेने से हर प्रकार के दस्तों में आराम होता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) बीज सहित मुनक्का 7 अदद, आम की गुठली की मींगी 1 अदद अफीम 5 रत्ती—इन सबको कूट-पीसकर, पानी के साथ 7 गोलियाँ बनालें। प्रतिदिन एक गोली खाते रहने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

(2) ताजा बेलगिरी को 2 तोले की मात्रा में भूनकर खाने से दस्त बन्ज हो जाते हैं।

(3) अफीम 3 माशा, अकरकरा 7 माशा, हुब्बुल्लास 14 माशा, सामक 14 माशा तथा झाऊ के फल 14 माशा—इन सबको खरल में डालकर, बबूल के रस में घोटें तथा 1-1 माशे की गोली बनाकर सेवन करें। इससे 1 घण्टे के भीतर ही दस्त बन्द हो जाते हैं।

(4) करेले के पत्तों का स्वरस 3 माशा, अनार के पत्तों का स्वरस 3 माशा तथा बकरी का दूध 1 तोला—इन सबको मिट्टी अथवा पत्थर के बर्तन में मिलाकर रखें। इसमें रुई का फाहा भिगो-भिगोकर नाभि पर रखने से हर प्रकार के दस्तों में लाभ होता है।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

नक्सवोमिका 3, 6— अधिक अथवा भारी भोजन के कारण पेट में अम्ल, खरोंच जैसी पीड़ा, बार-बार पाखाने के लिए जाना, परन्तु दस्त साफ न आना आदि लक्षणों पर उपयोगी है।

चायना 30— बिना दर्द वाले पीले रङ्ग के दस्त, अजीर्ण मिले दस्त, पेट फूलना, तीव्र प्यास आदि लक्षणों पर।

क्रोटनटिंग 6— पिचकारी की तरह पानी जैसे पतले पीले दस्त, खाने खाने के बाद रोग में वृद्धि, गरम पानी से चैन पड़ना, जी मचलना आदि लक्षणों में।

एलोज 30— पिचकारी जैसे पतले दस्त, रोगी हाजत को रोकने में असमर्थ रहे तथा पेट में आवाज होती हों।

पोडोफाइलम 30— सुबह से या पिछली रात से पेट में गड़गड़ाहट, सड़े, दुर्गन्धयुक्त, बिना दर्द के दस्तों पर।

पल्सेटिला 30— आँव-मिश्रित तथा रङ्ग-रूप बदलने वाले दस्तों पर।

विरेट्रम एल्ब 6— चावल के धोवन जैसे दस्त, अनजाने में दस्त हो जाना, ठण्डा पसीना, सम्पूर्ण शरीर ठण्डा हो जाना, तीव्र प्यास, शरीर में ऐंठन आदि लक्षणों पर।

कैमोमिला—हरे रङ्ग के दुर्गन्धित, पानी जैसे गरम तथा ऐंठनयुक्त दस्त व बच्चों के दाँत निकलने समय होने वाले दस्तों की यह श्रेष्ठ दवा है।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) बिस्मथ कार्बोनेट 5 ग्रेन, डावर्स पाउडर $\frac{1}{6}$ ग्रेन तथा केलोमल $\frac{1}{6}$ ग्रेन। यह खुराक है, इसे केवल एक बाद देने से ही दस्त बन्द हो जाते हैं। यदि इस औषध के कारण पेट में अफारा हो जाय तो 'सोडाबाई कार्ब' अथवा 'कैस्टर ऑयल' देना चाहिए।

(2) सोडियम ब्रोमाइड 5 ग्रेन, टिंक्चर ऑफ बेलाडोना 15 बूँद, एकुआ 1 औंस। यह मिक्श्चर नाड़ी-मण्डल के विकार के कारण उत्पन्न अतिसार में लाभकारी है। यदि अतिसार तीव्र हो तो इसमें 1 ग्रेन 'कोडोन फास्फेट' भी मिला देना चाहिए।

(3) डाइल्यूट सल्फ्यूरिक एसिड 16 बूँद, टिंक्चर ऑफ केसीकम 2 बूँद, टिंक्चर ऑफ ओपियम 7 बूँद तथा एकुआ (पानी) 1 औंस।

इस मिक्श्चर को भोजन से पूर्व दिन में 2 या 3 बार दें। यह अतिसार में लाभ करता है।

(4) टिंक्चर कैटेच्यो 30 बूँद, प्लोक्रेटा एरोमैटिक (पाउडर ऑफ चाक) 10 ग्रेन तथा चाक मिक्श्चर सहित 1 औंस।

यह मिक्श्चर भी अतिसार में लाभकारी है। दिन में 3 बार दें। छोटे बच्चों के लिए मात्रा 1 ड्राम तथा बड़ों के लिए 3 से 5 ड्राम तक है।

(5) पेटेण्ट औषधियों में **ऐण्टेरोवायो-फार्म** दस्तों को रोकने के लिए अच्छी दवा है। **क्लोरीडोन, कैम्फोडीन, क्रीमोसक्सोडन, कैओपेक्टेट** तथा **इण्ड्रोजायम** भी लाभकारी हैं।

(6) यदि दस्त बड़ी तेजी से आ रहे हों तो इमेटीन और यदि इमेटीन का व्यवहार न करना हो तो **मार्फिया एट्रोपीन** के इञ्जेक्शनों का प्रयोग अतिसार में लाभ करता है।

(7) यदि अतिसार के रोगी को मूर्च्छा आ जाय तो 'सैलाइन' के घोल का इञ्जेक्शन 'इण्ट्रावीनस प्रणाली' से लगाना चाहिए।

(8) अतिसार में निम्नलिखित इञ्जेक्शन भी लाभ करते हैं—

इमेटीन हाइड्रोक्लोर, कम्पाउण्ड, वैकीरियल वैक्सीन।

बिना दवा खाये दस्तों में लाभ

(1) एक छटाँक आँवलों को खूब महीन पीसकर चूर्ण बना लें । फिर उस चूर्ण को घी में पीसकर चटनी-सी बनालें । जिस व्यक्ति को दस्त हो रहे हों, उसे चित्त लिटाकर, उसका नाभि के चारों ओर पूर्वोक्त घी में पिसे आवलों के चूर्ण (लुगदी) की ऊँची दीवार-सी बना दें । उस दीवार के बीच के गड्ढे मे अदरक का स्वरस भर दें तथा रोगी को उसी स्थिति में कम से कम दो घण्टे तक लिटाये रक्खें । इस प्रक्रिया द्वारा नदी की भाँति बहते हुए दस्त भी बन्द हो जाते हैं ।

(2) बरगद के दूध को रोगी की नाभि में भर दें तथा उनके चारों ओर रोक लगाकर दो घण्टे तक रोगी को लिटाये रक्खें । इससे भी दस्त बन्द हो जाते हैं ।

(3) आँवलों को घी में भूनकर पानी में पीस लें और रोगी की नाभि के चारों ओर लगावें । इसके साथ ही तनिक-सी अफीम को अदरक के रस में घोटकर रोगी की नाक में 2-3 बूँद टपका दें । इस क्रिया से दस्त तुरन्त बन्द हो जाते हैं ।

(4) आम की छाल को दही के तोड़ में पीसकर रोगी की नाभि के चारों ओर लेप कर देने से भी दस्त बन्द हो जाते हैं ।

पेचिस (आँव-खून के दस्त) (Dysentry)

अधिक गरम, खुश्क, कच्चे तथा देर से पचने वाले पदार्थों का सेवन करने से बड़ी आँतों में सूजन आ जाता है और जख्म हो जाते हैं, जिनके कारण मरोड़ के साथ आँव अथवा आँव-खून मिश्रित दस्त होने लगते हैं । दस्तों के साथ ही नाभि में दर्द भी होता है । इस रोग की सामान्य-चिकित्सा में निम्नलिखित औषधियाँ हितकर सिद्ध होती हैं—

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, हींग, काला नमक, बच तथा हरड़—इन्हें समभाग ले कूट-पीसकर कपड़छन कर लें । 6-6 माशे की मात्रा में प्रातः सायं गरम पानी के साथ सेवन करते रहने के आमातिसार में लाभ होता है ।

(2) बेलगिरी, बच, पीपल, सोंठ, पटोलपत्र, कूट मीठा, अजवायन और बायबिड़ङ्ग—इन सबको समभाग लें, एकत्र पीसकर कपड़छन करलें । इस चूर्ण

को 6-6 माशे की मात्रा में प्रातः-सायं गरम पानी के साथ सेवन करते रहने से आमातिसार में लाभ होता है ।

(3) चिरचिटा (ओंगा, अपामार्ग या अजाझारा) की जड़ को पानी में घिसकर पीने से आँव-मरोड़ के दस्त ठीक हो जाते हैं ।

(4) खसखस के बीजों को महीन पीसकर दही में मिलाकर खाने से आँव-मरोड़ की पेचिश दूर हो जाती है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) कीकर का गोंद, ईसबगोल, तुख्मरिहाँ (काली तुलसी के बीज) और निशास्ता—इन सबको बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस लें, 2 से 4 तोले तक की मात्रा में सेवन करने से पेचस में लाभ होता है । इस नुस्खे में ईसबगोल की बिना कूटे-पीसे ही मिलाना चाहिए ।

(2) छोटी हरड़ और सोंफ—इन दोनों को बराबर लेकर घी में भूनकर पीस लें । फिर मिश्री मिलाकर 1 तोले की मात्रा में प्रतिदिन सेवन करने से पेचिश में आराम होता है ।

(3) ईसबगोल 1 तोला को आधा पाव दही में मिलाकर खायें । तीन चार दिन इसका सेव करने से पेचिश ठीक जायगी ।

(4) कालीजीरी 4 तोला, हरड़ 4 तोला तथा हालों 1 तोला—इन सबको घी में भूनकर पीसकर रख लें । फिर खाँड की चाशनी बनाकर उसमें इस पिसे हुए मसाले को मिला दें । ऊपर से 6 माशा मस्तङ्गी भी मिलाकर रख दें । रोजा सुबह-शाम 2 तोले की मात्रा में इसका सेवन करते से पेचिस जल्दी ठीक हो जाती है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

मर्ककोर 3x, 6x— पेट में ऐंठन, मरोड़, मुख में पानी आना, बारम्बार थोड़ा-थोड़ा मल तथा मल के साथ आँव-रक्त, विशेषकर रक्त अधिक निकलता हो तो इसे दें ।

मर्कसोल 3x, 6x— उपरोक्त औषध के लक्षणों के साथ ही यदि मल में आँव की अधिकता हो तो इसे देना चाहिए ।

रसटाक्स 3x, 6x— अत्यधिक बेचैनी, बरसात अथवा ठण्डी जगह में रहने के होने वाली पेचिश में इसे दें ।

एकोनाइट 3x, 30— सूखी हवा के कारण उत्पन्न रोग में यह विशेष

हितकर है । पेचिश के साथ ज्वर, घबराहट, बेचेनी तथा मृत्यु आदि लक्षणों पर ।

सल्फर 3x, 30— मलद्वार में खुजली तथा मल में रक्त की लकीर-सी रहती हो तो इसे दें । पुराने रोग में यह अधिक लाभ करती है ।

आर्सेनिक एल्ब 3x, 6x— रोग की संक्रामक स्थिति में इसे देना चाहिए। मल-मूत्र से गन्ध आना, अत्यधिक कमजोरी, इन्द्रियों का शिथिल हो जाना, व्याकुलता, मृत्यु-भय, शरीर पर लाल -नीले दाग पड़ जाना आदि लक्षणों पर। यदि इन लक्षणों के रहते हुए भी यह औषध काम न करे तो 'कार्बोवेज' दें । 'आर्सेनिक-एल्ब' से रोग बढ़ जाय तो 'नक्सवोसिका' को पर्यायक्रम से भी दिया जा सकता है ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) एण्टेरो बायोफार्म 1 टेब्लेट, थेलाजोल 2 टेब्लेट तथा सोडाबाई कार्ब 10 ग्रेन—इन सबको मिलाकर 1 खुराक बनायें, हर 4 घण्टे बाद 1-1 खुराक पानी के साथ देते रहें ।

(2) एण्ट्रीनिल $\frac{1}{6}$ टेब्लेट, सायोस्टरन 2 टेब्लेट, थेलाजोल 2 टेब्लेट तथा सोडाबाईकार्ब 10 ग्रेन—इन्हें मिलाकर एक खुराक बनायें । हर 4 घण्टे बाद पानी के साथ दें । जिन लोगों को 'एण्टेरो बायोफार्म' सहन नहीं हो पाता, उनके लिए यह औषध लाभकारी है । जब पीड़ा न रहे, तब इस नुस्खे में से 'एण्ट्रीनिल' को निकाल देना चाहिए ।

निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ पेचिश में लाभ करती हैं—

निवेम्बिन तथा मेक्साफार्म

(4) निम्नलिखित इन्जैशन पेचिस में हितकर हैं—

एमेटीन हाइड्रोक्लोराइड तथा एण्टी डिंसेण्ट्रिक वैक्सीन ।

(5) पुरानी पेचिस में निम्नलिखित इञ्जेक्शन लाभकारी हैं—

आयरन आर्सेनेट, आयनेट स्ट्रिक्नीन, आयरन आर्सेनेट न्यूक्लीन तथा आयरन आर्सेनेट ग्लिसरोफास्फेट ।

संग्रहणी

'ग्रहणी एक आँत का नाम है, जो कच्चे अन्न को ग्रहण कर, पके हुए को गुदा-मार्ग से बाहर निकाल देती है । जठराग्नि के दूषित हो जाने पर, वह कच्चे अन्न को बिना पकाये ही बाहर निकालने लगती है अर्थात् कच्चे दस्त होने

लगते हैं, उसी को 'संग्रहणी' कहा जाता है । अतिसार (दस्त) में पतली धातु निकलती है । तथा संग्रहणी में बँधा हुआ मल कभी पतला और कभी गाढ़ा-निकलता है, उसमें दुर्गन्ध आती है । कभी कम और कभी अधिक दस्त होना, कभी बन्द हो जाना, कभी पेट का फूलना आदि विभिन्न लक्षण प्रकट होते हैं। अन्त में शरीर पर सूजन आ जाती है, जो प्राण-घातक भी सिद्ध होती है यूनान में इस रोग को 'अरब' कहते हैं । इसकी सामान्य चिकित्सा के लिए निम्नलिखित योग हितकर है ।

आयुर्वेदिक चिकित्सा

(1) सोंठ अथवा चीते के चूर्ण को मट्ठे के साथ सेवन करने से संग्रहणी में लाभ होता है ।

(2) हरड़ के वृक्ष की छाल को मट्ठे में पीसकर सेवन करने से आँव तथा रसयुक्त संग्रहणी में लाभ होता है ।

(3) कालीमिर्च, चीते की जड़ को छाल तथा सेंधा नमक—इन तीनों को 1-1 तोला लेकर कूट-पीस छानकर चूर्ण बना लें । 3-3 माशा चूर्ण को प्रातः-सायं तथा मध्याह्न- दिन में तीन बार मट्ठे में डालकर सेवन करने से संग्रहणी, गुल्म, मन्दाग्नि तथा बबासीर आदि सभी उदर-रोगों में लाभ होता है।

(4) सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, लौंग, आक की जड़ तथा अफीम—इन सबको कूट-पीस-छानकर रखलें । 1 से 2 रत्ती तक की मात्रा में सेवन करने से संग्रहणी, कफ, खाँसी आदि रोगों में लाभ होता है ।

(5) बेलगिरी, नागरमोथा, इन्द्र-जौ, सुगन्धवाला और मोचरस इन्हें समभाग ले बकरी के दूध में डालकर दूध को पकायें । इस प्रकार के दूध को तीन दिन तक पीने से बहुत पुरानी, अत्यधिक बढ़ी हुई आँव तथा खून वाली असाध्य संग्रहणी में भी लाभ होता है ।

उक्त औषधियों के चूर्ण 4 तोला को 32 तोले दूध में डालें । साथ ही उसमें 1 से 10 छटाँक पानी भी मिलादें । फिर मन्दाग्नि से दूध को पकायें। जब पानी जल्कर दूध मात्र शेष रह जाय, तब उतारकर छान लें और पियें ।

(6) काला नमक, चीते की छाल और कालीमिर्च—इन तीनों को समभाग लेकर कूट-पीस छानकर चूर्ण बना लें । इस चूर्ण को 3-3 माशे की मात्रा में कुछ दिनों तक नियमित रूप से मट्ठे के साथ सेवन करते रहने से संग्रहणी, वायुगोला, तिल्ली, मन्दाग्नि आदि अनेक उदर-रोग दूर हो जाते हैं ।

(7) खजूर के फल 6 माशे की मात्रा में 2 तोला गाय के दही के साथ दिन में तीन बार सेवन करते रहने से संग्रहणी दूर हो जाती है ।

(8) बबूल की फली 6 माशे को आधा पाव ठण्डे पानी के साथ तीन दिन तक सेवन करने से संग्रहणी में लाभ होता है । यदि दस्त अधिक होते हों, तो 1 खुराक में 3 माशा खसखस के बीज मिलाकर सेवन करने से संग्रहणी में तुरन्त लाभ होता है ।

(9) लिसोड़े की मुलायम पत्तियाँ 3 माशा महीन पीसकर सेवन करने से संग्रहणी में लाभ होता है ।

(10) भुनी हुई भाँग 2 माशा को 3 माशे शहद के साथ चाटने से संग्रहणी नष्ट हो जाती है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) आम की पुरानी गुठली की मीगी तथा जामुन की गुठली की मीगी—दोनों को बराबर—बराबर लेकर कूट-छानकर चूर्ण बनायें । सुबह-शाम 3-3 माशे की मात्रा में इस चूर्ण को छाछ के साथ सेवन करते रहने से संग्रहणी में लाभ होता है ।

(2) छोटी हरड़ 2 तोला तथा अफीम का डोडा 1 तोला लेकर दोनों को शुद्ध घी में अलग-अलग भूनें । फिर महीन पीसकर, बराबर की खाँड़ मिलाकर रखलें । प्रतिदिन 9-9 माशे सुबह-शाम पानी के साथ सेवन करते रहने से संग्रहणी से लाभ होगा ।

(3) रसोत 5 तोला को पानी में घोलकर छानलें तथा थोड़ी देर के लिए रख दें, जिससे कि मिट्टी वगैरह नीचे बैठ जाय । फिर उस पानी को निथार कर इतना पकायें कि पानी तो जल जाय, सिर्फ रसौत रह जाय । फिर उसे हल्की आग पर सुखाकर 1-1 रत्ती की गोलियाँ बनाकर रख लें । दिन में 4 बार 5-5 गोलियाँ छाछ के साथ खिलायें तथा अन्य कोई भी खाने की वस्तु तीन दिन तक न दें । तत्पश्चात् मूँग की दाल दी जा सकती है । इससे संग्रहणी में लाभ होगा ।

होम्योपैथिक - चिकित्सा

अतिसार (दस्त) के लिए जो औषधियाँ बताई गयी हैं, उन्हीं को लक्षणानुसार इस रोग में भी देने से लाभ होता है ।

एलोपैथिक - चिकित्सा

(1) बिस्मथ कार्बेनेट 15 ग्रेन, सोडियम बाई कार्बोनेट 20 ग्रेन, लाइट कार्बोनेट ऑफ मैग्नेशिया 10 ग्रेन, क्यौसल्ज ऑफ ट्रोगाकन्थ 40 ग्रेन, क्लगेफार्म वाटर (कुल मिलाकर) 1 औंस ।

यह मिक्चर दिन में दो या तीन बार दें । यह संग्रहणी में हितकर है । पेचिश तथा अतिसार में भी लाभ करता है तथा पाचन-शक्ति को बढ़ाता है ।

(2) मार्फिया, आर्गिटीन, हाइड्रोक्लोराइड तथा इमाटिक हाइड्रोक्लोराइड के इन्जेक्शन भी इसमें लाभ करते हैं ।

कृमि - रोग (Worms)

अनेक प्रकार के कुपथ्य, विरुद्ध भोजन, मीठा और बासी भोजन आदि अनेक कारणों से शरीर के भीतर विभिन्न प्रकार के कीड़े पड़ जाते हैं । शरीर के भीतर कीड़े उत्पन्न हो जाने पर ज्वर, शरीर का रङ्ग बदल जाना, पेट में शूल, दस्त, मन्दाग्नि, वमन, भोजन का बुरा लगना, सोते समय दाँत किटकिटाना, गुदा में खुजली आदि विभिन्न लक्षण प्रकट होते हैं । ये कीड़े चपटे, केंचुए जैसे लम्बे, सूत जैसे पतले, छोटे-छोटे सफेद रङ्ग के तथा गोल आदि कई आकार-प्रकार के होते हैं । यदि समय पर इनका इलाज न किया जाय तो आगे चलकर मिर्गी, हैजा, पागलपन, पाण्डु आदि लक्षण प्रकट होते हैं । कुछ कीड़े पाँच से आठ गज तक लम्बे भी पाये जाते हैं । यह कीड़े छोटे बच्चों के पेट में अधिक होते हैं ।

पेट में किस प्रकार के कीड़े हैं, इसकी परीक्षा का सरल साधन पाखाने की जाँच (Stool test) कराना है ।

शरीरस्थ कृमियों को नष्ट करने के लिए निम्नलिखित योग लाभकारी हैं-

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) एक तोला बायबिडङ्ग को महीन कूट-पीसकर कपड़छन करलें फिर उस चूर्ण में शुद्ध शहद मिलाकर रख लें । इस औषध को दिन में तीन बार चाटने से करोड़ों कृमि नष्ट हो जाते हैं ।

(2) बायबिडङ्ग और सहजने के काढ़े मे शहद डालकर पीने से उदरस्थ कृमि नष्ट हो जाते हैं ।

(3) ढाक के बीज और अजवायन—दोनों को पीसकर खाने से कृमि रोग नष्ट हो जाता है ।

(4) अनार की छाल से काढ़े (क्वाथ) में 3 माशे तिल का तेल मिलाकर तीन दिन तक नित्य पीने से पेट के सब कीड़े निकल जाते हैं ।

(5) प्याज का रस पिलाने से बालकों के पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं तथा बदहज्मी भी दूर हो जाती है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) बासी पानी में 6 माशा खुरासानी-अजवायन पीसकर, उसमें 1 तोला पुराना गुड़ मिलाकर पीने से भीतर के सभी कीड़े नष्ट हो जाते हैं ।

(2) ढाक के बीच 5 माशे को छाछ में पीसकर पीने से पेट कीड़े नष्ट हो जाते हैं ।

(3) पेट में कद्दू-दाने (सफेद रङ्ग के घिये के बीजों जैसे कीड़े) होने पर पहले रोगी को 6 माशे अरण्डी का तेल पिलायें । फिर तारपीन का तेल 3 माशे को 3 तोला गुनगुने पानी में मिलाकर पिचकारी द्वारा पाखाने की जगह (गुरुद्वारा) से आँतों में पहुँचायें । इससे सब कीड़े मरकर बाहर निकल आयेंगे। इसके अलावा 1 माशे काफूर (कपूर) को 1 तोला बैसलीन में मिलाकर मलद्वार (गुदा) में लगाने से कीड़ों के काटने के कारण होने वाली खुजली दूर हो जाती है । खाने के लिए निम्नलिखित गोलियाँ देने से भीतर के कीड़े मर जाते हैं और उनकी उत्पत्ति रुक जाती है—

रसौत 2 माशा, चाकसू छिला हुआ 2 माशा एलुआ 1 माशा, कालीमिर्च आधा माशा और नीम के पत्ते 5 अदद—इन सबको महीन पीसकर मूँह के दाने के बराबर गोलियाँ बनालें । छोटे बच्चे को 1 और बड़े बच्चे को 2 गोली दूध में घोलकर सुबह-शाम पिलायें ।

(4) पेट में केंचुए हों तो 6 माशे से एक तोला तक (आयु के अनुसार कम-अधिक) अरण्डी का तेल पिलाकर पेट साफ कर दें, फिर निम्नलिखित गोलियाँ खिलायें ।

आफ्सन तीन, रूमी कमीला, बायबिडङ्ग, पलास पापड़े की गिरी—इन सबको 3-3 माशा महीन पीसकर आड़ू के पत्तों के पानी में गूँथकर चने के बराबर गोलियाँ बनाकर रखलें ।

बच्चे की उम्र के अनुसार 1 से 2 गोली तक सुबह शाम पानी या दूध में घोलकर दें । तीन-चार दिन इन्हें खिलाने के बाद फिर 6 माशे से 1 तोला तक अरण्डी का तेल पिलायें । फिर इन गोलियों को 3-4 दिन तक पुनः

खिलायें। ऐसा दो-चार बार करने से पेट के सभी केंचुए मरकर बाहर आ जाते हैं ।

(5) कमीला 6 माशे को खट्टी छाछ में मिलाकर पिलाने से दस्त आते हैं और कद्दू-दाने बाहर निकल जाते हैं ।

(6) बकायन की छाल 2 तोला को 1 सेर पानी में उबालें । जब आधा पानी रह जाय, तब थोड़ा-सा गुड़ मिलाकर रोगी को रात के समय पिलायें । इस प्रयोग को तीन दिन तक करते रहने से सभी कद्दू-दाने निकल जाते हैं ।

(7) बच्चों के पाखाने की जगह (गुदा) में नीम का तेल लगाने से चुनूने मर जाते हैं ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

मिना 2x, 200— यह हर प्रकार के कृमियों पर हितकर औषध है ।

टयुकियम 1x— सूत जैसे कृमियों के लिए इसे दें ।

सैण्टोनाइन 1x **वि०**—यह भी हर प्रकार के कृमियों पर लाभ करता है।

स्पाजिलिया 3— यह छोटे कृमियों पर लाभकारी है ।

मर्ककोर 3x— यह फीते की भाँति लम्बे कृमियों पर उपयोगी है ।

क्युप्रमम ऐसेटिकम 3— यह केंचुए जैसे लम्बे कृमियों पर हितकर है।

सल्फर 30— कृमियों के कारण होने वाली पेट की शूल-वेदना के शमन के लिए उपयोगी है ।

चेनोपोडियम तेल 30— इस तेल की 10 बूँद की मात्रा में 2-2 घण्टे के अन्तर से तीन बार दें । यह गोल कृमियों के लिए अत्युत्तम है ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) 'सूत्र-कृमि' (थ्रेड वर्म) के लिए जैनसन वायलैट टैब्लेट अथवा पाउडर या मेराक्सेल टैब्लेट हितकर है । खाना खाने के बाद इसमें से किसी एक की टिकिया लेनी चाहिए ।

(2) केंचुआ (राउण्डवर्म) के लिए निम्नलिखित मिक्श्चर लाभ करता है—

सोडाबाई-कार्ब 2 ग्रेन, सेण्टोनाइन 2 ग्रेन तथा कैलोमेल 2 ग्रेन इन्हें मिलाकर सोते समय सेवन करायें । प्रातःकाल मैगसल्फ का जुलाब देना चाहिए।